प्रकाशक

मत्री, सर्व-सेवा-सघ-प्रकाशन,

राजघाट, वाराणसी



प्रथम सस्करण : २,०००

दिसम्बर, १९६३

मल्य : एक रुपया पचास नये पैसे



मुद्रक .

नरेन्द्र भार्गव,

भार्गव भूपण प्रेस, वाराणसी

उपोद्घात

१. प्रास्ताविक

नामघोषा का सक्षिप्त रचनातर, जो असमिया मे प्रकाशित किया गया था, उसका यह नागरी सस्करण, मैत्री-आश्रम के प्रकाशन के तौर पर, सर्व-सेवा-सघ की ओर से, प्रकाशित किया जा रहा है, यह खुशी की बात है। वह असम के वाहर, और असम मे भी, लोक-भोग्य होगा, ऐसी मै आशा करता हूँ।

भारत की सव प्रातीय भाषाओ का अध्ययन करने की जरूरत मुझे पडी। और प्रेमपूर्वक मैने उनका अध्ययन किया। उससे मुझे वहुत आनद हुआ, और लाभ भी हुआ। भूदान के काम को भी उससे गति मिली। लेकिन उसके लिए अनेक लिपियाँ पढने की तकलीफ आँख को हुई। वह कर्तव्य-भावना से सहन की गयी। अगर ये सव भाषाएँ नागरी लिपि में होती, तो वहुत कम समय में, और विना तकलीफ के, मेरा काम हो जाता। इसलिए मेरा आग्रह रहा है, कि ये भाषाएँ नागरी मे भी लिखी जायँ। मैं "भी" कह रहा हूँ, "ही" नही। क्योकि उन-उन लिपियो का अपना इतिहास है। शायद अपना अलग सस्कार भी है। और ममत्व तो है ही। इसलिए उनका अपना स्थान कायम रखकर उनके साथ नागरी भी चले, तो भारत की एकता के लिए वह लाभदायी होगा।

हमारी पदयात्रा में जापान के एक भिक्षु श्री इमाइ कुछ महीने रहे थे। उनके पास जापानी सीखने का भी मुझे मौका मिला था। मैंने देखा, कि जापानी के लिए नागरी वहुत अच्छी तरह चल सकती है। और इन दिनो,

शाति-निकेतन के प्रोफेसर श्री नारायण सेन के साथ चीनी भापा की पाठ्य-पुस्तक हिन्दी मे वनाने की कोशिश की। तव प्रोफेसर साहव को महसूस हुआ, कि चीनी शव्दो का ठीक उच्चारण नागरी मे लिखा जा सकता है। चीनी और जापानी का यह अनुभव, यहाँ मै इसलिए वता रहा हूँ, कि वे दोनो भापाएँ एक सुवोव लिपि की तलाश मे है। अगर भारतभर मे नागरी चले, तो वह भारत के वाहर भी काम दे सकती है, इसका हमे ख्याल आ जाय। खैर, वह तो भविष्य के गर्भ में है, और उसकी मुझे कोई आसक्ति नही।

इस सस्करण मे असमिया व्याकरण की रूपरेखा थोडे में दी गयी है। अत म कठिन शव्दो का अर्थ भी दिया है। दोनो की मदद से, हिंदी जाननेवालो को यह पुस्तक, पढने में, लगभग हिंदी जैसी ही मालूम होगी। माधवदेव की भापा पर व्रज भापा का असर रहा है, ऐसा असमिया के विद्वानो का मत है।

पुस्तक के रचनाक्रम के विपय में, असमिया आवृत्ति की प्रस्तावना मे विवरण आया है। वह प्रस्तावना इस पुस्तक में दी गयी है। इसलिए, उस विषय मे और कुछ खास कहने का रहता नही।

* * *

२. अंतरंग निरीक्षण

अव हम ग्रथ के अतरग को देखेंगे। प्रथम ही ध्यान खीचता है "मुक्तित निस्पृह जिटो"। मुक्ति के विषय में निरभिलापता। भारतीय भक्ति-धारा का यह एक सर्वमान्य विचार है। "नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एक"—"दीनजनो को छोडकर, मैं अकेला मुक्त नही होना चाहता"। यह प्रह्लाद का वचन सुप्रसिद्ध है। लेकिन, नामघोपा के आरभ में ही इस विचार को पाकर चित्त सहज ही आकृष्ट होता है। पर इसका अर्थ यह नही, कि मानव जीवन के अतिम लक्ष्य के तौर पर मुक्ति अमान्य है (३४४)।

१. मुक्ति-नि स्पृहता

जहाँ मुक्ति के विपय मे भी नि स्पृहता आयी, वहाँ अन्य सव आशाओ का परित्याग अपेक्षित ही है (३ड–६९)। भगवान् स्वय "निराशा" के ईश्वर है (२०१)।

"निराशा" शब्द से रसहीनता न समझी जाय। प्रथम पद्य मे ही

२ रसमय भक्ति

"रसमय" भक्ति की माँग है। और ग्रथ की समाप्ति "एहु रस माधव मूरुसमति गावें" (५००) इस वचन से होती है। इस तरह ग्रथ की रचना रसादि-रसान्त है।

"रसमय" भक्ति तो सभी वैष्णवो ने मानी है। लेकिन उस रस मे वे ऐसे वह जाते है, कि भक्ति को वैपयिक शृंगार का रूप आता है। नामघोषा

३ नैर्मल्य

इस दोप से सर्वथा मुक्त है। यहाँ का सारा वातावरण अत्यन्त निर्मल है। हर साधन निर्मल होना चाहिए, इसीकी यहाँ चिता है। निर्मल रति (६५, १३३), निर्मल आनद (२८४), निर्मल धर्म (३९७), निर्मल भक्ति (१३६), निर्मल ज्ञान (६७), इस तरह अनेक स्थानो मे निर्मलता पर जोर दिया है। जैसे शरत्-काल पानी को निर्मल वनाता है, वैसे हरि-नाम, चित्त मे प्रवेश करके, उसको निर्मल वनाता है (१९०)। चित्त-नैर्मल्य के लिए ही भक्ति का विधान है (२६७)। अगर भक्ति के मिष से चित्त विपयासक्त हो जाय, तो भक्ति ने आत्महत्या ही कर ली।

जैसे भक्ति-मार्गी, रस-कल्पना-ग्रस्त होकर, एक वाजू वह जाते है, वैसे समाज-सुधारक, लोगो के दुराचारो के खडन में पडकर, दूसरी तरफ वह

४ सौम्य रीति

जाते है। तमोगुण के तीव्र खडन मे भी, तमोगुण आ जाता है। दुराचारो का खडन जरूर होना चाहिए। लेकिन वह, सौम्य, और सानुरूप, होना चाहिए। माधवदेवने जहाँ भी खडन किया है, सौम्य रीति से किया है। जिसे मै "उपहार" पद्धति कहता हूँ, उसका दर्शन यहाँ होता है। "प्रहार" एकाध प्रसग में ही हुआ है (२२४)। एक जगह दुर्जन को "सज्जन" ही कहा है (२९७)।

भक्ति-मार्ग अत्यन्त सुलभ है। नाम-स्मरण मे तो कोई प्रयास ही किसीने माना नही (३५९)। ससार-व्याधि के लिए नाम महौषध है (२१९)। लेकिन उसके साथ माधवदेव ने एक पथ्य बताया– कि हमारे हाथ मे किसी पर अन्याय न हो। "दण्डधारी" भगवान्, हृदय मे विराजमान है, इसका ख्याल रखा जाय (२४२)। अन्याय से बचना, खास करके जब कि समाज-रचना की बुनियाद मे ही उच्च-नीचता, वैषम्य, और नाना प्रकार के भेद पडे हो, मामूली बात नही। इसके लिए परम यत्न करना होगा (३६०)। माधवदेव हमे आगाह कर रहे है, कि यद्यपि हरिनाम सर्व-पाप-मोचक है, तथापि, अगर हम "देह-धन-जन-अर्थ-लोभे" अन्यायमूलक जीवन बिताते जायँ, और उधर नाम भी लिया करे, तो वह नाम "तारिते शीघ्रे नपारे" (४६४)। नाम-स्मरण के साथ जब अन्याय-निवृत्ति का कार्यक्रम जुड जाता है, तब भक्ति-मार्ग का एक विशाल, व्यापक, विश्वरूप-सा हमारे सामने खडा होता है। इसलिए माधवदेव, भक्त-लक्षण मे वर्णन करते है—"वह लोक-हित की निरतर चिंता करता है। उसका चित्त करुणा रस से भरा हुआ है। परिणाम की चिंता किये बिना, वह अपने ही गुण में तुष्ट है। और वह सर्वथा अहकार-मुक्त है।" (४७२)।

५. अन्यायमोचन

अन्याय-विमोचन, और लोकहित-चिंतन मे लगे हुए हरिदास को नम्रता की आवश्यकता होगी, यह तो स्पष्ट ही है (२११)। और उसके साथ-साथ उसको निर्भय रहना पडेगा। यहाँ तक कि "मृत्यु के मुख मे प्रवेश करने पर भी वृत्ति निष्कम्प रहे", ऐसी तैयारी करनी होगी। इसके लिए, चित्त में नाम प्रविष्ट होना चाहिए (३४५)। नाम-स्मरण की निष्पत्तियाँ बताते हुए, सब निष्पत्तियो मे, निर्भयता का प्रथम निर्देश करते है (खण्ड १९८)। गीता मे जहाँ दैवी-सपत्ति का वर्णन आया, वहाँ निर्भयता को नेतृत्व-स्थान देकर, अन्त में "नातिमानिता", यानी "नम्रता", कही गयी है, जो सब दैवी गुणो की रक्षक है।

६ नम्रता और निर्भयता

नाम-स्मरणादि भक्ति-मार्ग, सबके लिए खुला है। "गारो भोट यवन" हरि-नाम ले सकते हैं। अन्त्य-जन हरिनाम से मुक्त होते हैं (२९७)। राम-नाम से "मिरि आसम कछारी" तरते हैं (४४४)।

७ मुक्त-द्वार

यहाँ सर्व जनो के लिए मुक्त-द्वार है। यह धर्म कुछ खास पार्थिको के लिए न होकर, पृथ्वी के सब मानवो के लिए है। अर्थात् वह मानव-धर्म है (४१८)। इससे भी आगे जाकर कहना चाहिए, कि इस पर सब प्राणियो का अधिकार है (३९७)। इस विषय मे गजेन्द्र-मोक्ष आदि कथाएँ, मशहूर ही हैं (९९, २६२)।

केवल भक्ति से ही उद्धार सभव है। भक्ति स्वतत्र और स्वयपूर्ण साधन है। यह भक्तिमार्ग की निष्ठा है। "भगति स्वतत्र, अवलब न आना", यह तुलसीदासजी का वचन सब जानते हैं।

८ भक्ति—स्वतत्र और स्वयंपूर्ण

नामघोषा में भी यही विश्वास दीखता है (२२९, २३०)। भक्त के लिए इस प्रकार का विश्वास स्वाभाविक ही नही, अनिवार्य है। अन्यथा भक्त अपनी भक्ति को ही खडित करेगा।

इसका अर्थ यह नही कि ज्ञान को भक्ति मे स्थान ही न हो। "साधन-सोपान" का विवरण करते हुए माधवदेव कहते हैं, "भक्ति चित्त को शुद्ध करती है। सहज ही उसमें से वैराग्य, और बोध का लाभ होता है, जिससे परम-पद की प्राप्ति होती है" (४६८)। लेकिन वह बोध भक्त को भगवत्-प्रसाद से मिलता है, ऐसी भक्तो की मान्यता है (३३०)।

९ भक्ति में ज्ञान का स्थान

तदनुसार, एक जगह, भगवान् से उन्होने विज्ञान-प्रदीप की माँग भी की है (१६८)। "विज्ञान" यानी अनुभव-ज्ञान, जिसके लिए "बोध" या "प्रबोध" शब्द प्रयुक्त है (२०८)। ज्ञान तार्किक भी हो सकता है। तार्किक ज्ञान से कोई लाभ नही (२१४)। लेकिन सत्त्व-निष्ठ बुद्धि से लब्ध हुए ज्ञान का महत्त्व, भक्ति-मार्ग में सुरक्षित है।

इस सिलसिले मे खण्ड ९६ ध्यान खीचे बिना नही रहता। एकागी भक्ति-मार्गी, बुद्धि को बहुत ही गौण स्थान देते है। वैसा माधवदेव ने नही किया है, बल्कि उस खण्ड मे शास्त्र, गुरु, और शिष्य, तीनो की रक्षा, शिष्य-प्रज्ञा पर निर्भर है, यहाँ तक वे कह गये है। "शिष्यापराधे गुरोर्दण्ड", ऐसा मानने का रिवाज पड गया है। लेकिन यह खण्ड बोल रहा है "शिष्यापराधे शिष्यस्यैव दण्ड" (२५५)।

भक्ति, ज्ञान-निरपेक्ष कही जाती है, वैसे वह कर्म-निरपेक्ष भी है। मूढ कर्म-श्रद्धा तो, भक्ति-विरोधी भी हो जाती है (१८२)। लेकिन कर्म अगर भक्ति के अग के तौर पर किया जाता है, तो उस कर्म को सेवा का रूप आता है। उसको नामघोपा में, न सिर्फ मान्यता दी है, बल्कि उसको "सेवा-रस" नाम दे दिया है (५)। नामघोपा का यह विशेष शब्द मानना चाहिए। गाधीजी, जो इस जमाने के बडे कर्मयोगी थे, अपने कर्म-योग को "सेवा" ही नाम देते थे।

१०. भक्ति में कर्म का स्थान

नामघोपा में भक्ति का स्वरूप "ईश्वर-शरणता" है। भगवद्गीता का यही निचोड है। पैगम्बर ने भी इसी पर जोर दिया था। "इसलाम" शब्द का अर्थ ही ईश्वर-शरणता है। इच्छा-स्वातत्र्य, जो मनुष्य के पुरुषार्थ का मूलाधार है, ईश्वर-शरण भक्त को अपराध-सा मालूम होता है (१३०–१३२)।

११. भक्ति का स्वरूप — हरिशरणता

ईश्वर के स्वरूप के विषय में भी भक्त की अपनी एक रुचि होती है। वह जानता है कि ईश्वर नित्य-शुद्ध-बुद्ध है (३३, १५७)। फिर भी भक्त के लिए वह करुणामय है। न सिर्फ वह करुणा का सागर है, बल्कि करुणा की बहती हुई नदी भी है (१३९)। स्खलन-शील मानवता के लिए (६२) परमेश्वर का करुणामय होना, एक व्यावहारिक आवश्यकता है। अद्वैत की गर्जना करनेवाले,

१२. ईश्वर— करुणामय

शकराचार्य को भी, "नारायण करुणामय शरण करवाणि तावकौ चरणौ", कहना पडा है। और "रहमानुर् रहीम" के विशेषणो से अल्ला पहचाना जाता है, इसका यही कारण है। हमारे सहस्र-सहस्र अपराधो के लिए, हम प्रभु से क्षमा तो माँगते ही है (२०)। लेकिन उसके मदिर मे प्रवेश करने के लिए हम पर "वेत्र-प्रहार" हुआ तो भी, उसको हम भाग्य मानेगे। प्रभु हमारे अपराधो के लिए दण्ड देना पसद करेगे, तो उनकी हम पर वह कृपा ही होगी (३७)। हमको क्षमा करना, या हमे दण्ड देना, हम उन्ही पर सौपते है। और उनसे इतनी ही प्रार्थना करते है, कि "करियो कृपा जेन उचित हय" (१७८)।

ईश्वर की करुणा दर्शाने के लिए, नामघोषा मे ईश्वर को पिता, गुरु, आदि का स्थान दिया है (७९, १५१, २७६ इ०)। मातृस्थान कम पाया जाता है। दक्षिण भारत के भक्तो ने ईश्वर को मातृ-रूप मे देखा है, परन्तु उत्तर भारत मे वैसा नही दीखता। शक्ति के उपासक मातृ-उपासना करते है, वह अलग वात है। लेकिन ईश्वर को स्वय मातृ-रूप मानकर, सहस्रो पद्यो में ईश्वर का स्तवन, दक्षिण भारत में मिलता है, वह वहाँ की एक खास चीज है। रवीन्द्रनाथ ने "जननी तोमार करुण चरणखानी" इत्यादि पद्य लिखे है, तथापि "तुमि आमादेर पिता" यही मुख्य ध्वनि है। वाइविल मे भी ईश्वर को "फादर" के रूप में देखा है। वेद की प्रार्थना "पिता नोऽसि पिता नो वोधि" प्रसिद्ध ही है—यद्यपि वेद में "त्व माता शतक्रतो वभूविथ", ऐसे भी वचन आये है। मातृ-भावना के अभाव की पूर्ति, नामघोषा में दो स्थानो मे, धेनुवत्स-दृष्टात से की है (१२८, ४२५)।

१३ दाक्षिणात्यो का विशेष—मातृभाव

नामघोषा कोई दार्शनिक ग्रथ नही है। वह भक्ति और प्रार्थना की पुस्तक है। लेकिन तत्त्वज्ञान का जो आनुषगिक दर्शन उसमें आया है, वह अपने मे परिपूर्ण है।

ईश्वर सगुण या निर्गुण? इसका उत्तर दिया है, "निर्गुण सगुण और गुणनियता" (१४८)। इससे वेहतर उत्तर नही हो सकता। जीव और ईश्वर का सबंध "आमिओ अश तोमार" (७५)। ईश्वर ही एकमात्र सत्य, वाकी सब "चराचर मायार कल्पित", केवल विनोदरूप (२४)। अनात्मा मे आत्म-बुद्धि, दुख का कारण (१५४)। "इद्रियगण भूत प्राण वुद्धि मन" यह सब जडराशि है (१९२)। फिर भी जड और चेतन के वीच रहने का नाटक, मन कर सकता है। जिसका मन जिस पक्ष मे पडेगा, वैसा ही उसका जीवन वनेगा। (२३२)। नर-तनु महान् पुण्य से प्राप्त हुई है, जिसमे मुक्ति की शक्यता है (१०३)। लेकिन गलत काम करके, कई दफा, हम वह खो चुके है (१६१)। और आगे भी, भक्तिहीन जीवन जीयेगे तो, खो सकते है, यहाँ तक कि "तृण तरु शिला" भी वन सकते है (२९९)। यह है माधवदेव का तत्त्वज्ञान। और उसको उन्होने "शुद्ध-मत" नाम दिया है (२२१)। मै इससे **"भक्ति-प्रधान, एकेश्वर-निष्ठ, अद्वैत"** समझा हूँ।

१४ तत्त्वज्ञान

यहाँ पर एक वात ध्यान में लेने की है, कि यद्यपि भक्ति-प्रधान होने के नाते, माधवदेव विधि-मुक्ति चाहनेवाले है (४०६), तथापि वेद-मर्यादा का उल्लघन वे सहन करनेवाले नही (३३३)। कहते है, "जो श्रुति-स्मृति की आज्ञा का उल्लघन करेगा, वह चाहे भगवान् का भक्त भी हो, वैष्णव नही कहा जा सकता" (३५१)। श्रुति-जननी के पद-पथ पर हम चल रहे है, ऐसा उन्होने दावा किया है (३४८)। लेकिन उत्कट भक्ति, और परम वैराग्य में, विधि-मर्यादाएँ टिक नही सकती, यह भी वे कह देते है (३३६-३३७)।

१५ वेद-मर्यादा

एक प्रश्न और उठता है। मूर्तिपूजा के विषय मे नामघोषा का क्या रुख है? असम प्रदेश में, हर गाँव में "नामघर" होता है। और उसमे मूर्ति नही रखी जाती, वल्कि ग्रथ रखा जाता है। रामानुज, मध्व, वल्लभ, चैतन्य, आदि, सब मूर्ति को माननेवाले है। यहाँ तक कि, निर्गुण ब्रह्मवादी होते हुए भी, शकराचार्य ने,

१६ मूर्तिपूजा

विखरे हुए पथो के समन्वय के लिए ही क्यो न हो, पचायतन-पूजा चलायी। उम लिहाज से, नामघरो मे मूर्ति का न होना, एक विशेप सुधार माना जायगा। लेकिन जहाँ तक नाम-घोषा का ताल्लुक है, उसमे मूर्तिपूजा का निपेध या अनादर नही है, बल्कि आदर ही सूचित हे (२२)। भगवान् को जैसे "मूर्तिशून्य" कहा है (१८१), वैसे ही "मधुर-मूरति" भी कहा है (४८३)। यही ठीक है। भगवान् अमूर्त ही हैं, ऐसा हम आगह रखेंगे, तो वह एकागिता होगी। "द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे। मूर्त्त चैव अमूर्त्त च" (बृहदारण्यक २२१)। इस तरह, ब्रह्म के दो रूप, उपनिपदो ने भी कहे हैं। मूर्त मे जो अमूर्त छिपा हुआ है, उसका ख्याल न करते हुए, अगर मूर्ति की पूजा की जायगी, तो वह जड-पूजा होगी। और जड-पूजा का निपेध अवश्य करना चाहिए (२१६)। मूर्ति-पूजा को "द्वापर-युगीन धर्म" कहा गया है। और 'कलियुग' के लिए नाम-सकीर्तन साधन बताया है (४३५)। इसका अर्थ इतना ही है, कि पूजा के लिए, बाह्य साधन-सामग्री की, और पूजा-विधि के ज्ञान की, अपेक्षा रहती है। ऐसी कठिनाई हरिकीर्तन मे नही है। इसलिए हरिकीर्तन छोडकर, अगर कोई पूजा आदि मे लगेगा, तो उसका वह श्रम-मात्र होगा (४३६)। नाम-सकीर्तन की यह महिमा नि सशय है। और उसमे जो तन्मय होगा, उसको पूजा आदि की जरूरत नही रहेगी, यह भी स्पष्ट है। हिन्दू-धर्म मे पूजा, लाज़िमी या अनिवार्य नही मानी है। वैसे उसका अनादर भी नही है। "मूर्तिं च नावजानाति", यह हिन्दू-धर्म की वृत्ति है। वैसी ही नामघोपा की है।

१७ सामाजिक पुरुषार्थ की एक दिशा

एक सामाजिक सुधार की वात, जिसके लिए हमे महा-पुरुषार्थ करना पडेगा, माधवदेव ने नामघोषा में सुझायी है। मास, मत्स्य, आदि के सेवन से, समाज मुक्त हो, इसकी तडपन, उनके हृदय मे थी। इसका दर्शन घोषा ३५५ में मिलता है। यह घोषा तो भर्तृहरि के एक श्लोक का तर्जुमा है। उसका नामघोपा के प्रतिपाद्य विपय के साथ, सीधा

सवव नही है। फिर भी, इमको नामघोपा मे स्थान देकर, उन्होंने अपना विशेप मनोभाव प्रकट किया है। "आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि", यह भारत-भूमि का अपना विचार है। इम विपय मे अनेक प्रयोग, प्राचीन-काल से आज तक, भारत मे किये गये है। लेकिन अभी वहुत कुछ करना वाकी है। उमके लिए "दवि दुग्ध घृत मवु" (१८५), यह उपाय भी नामघोपा मे सूचित है। और भी कई वैज्ञानिक खोजे करनी पडेगी। देखना है, भारत यह कव कर सकता है।

जिनको भारत के भक्ति-साहित्य का परिचय है, उनको नामघोपा मे, अपना चिर-परिचित वातावरण ही मिलेगा। पचास साल पहले,

१८. परिचित वातावरण

वचपन में, मै महाराष्ट्र के सतो के भक्ति-साहित्य में निरतर निमग्न रहता था। पचास साल के वाद, जव नामघोपा पढने लगा, तो मुझे भास हुआ, कि मैं मराठी ही पढ रहा हूँ। वे ही विचार, वे ही शब्द, और कभी-कभी तो वे ही वाक्य, दीख पडे। मिसाल के तौर पर—

१ "हरि तैसे हरिचे दास" (तुकाराम)
"हरि जेन आति कृपामय
भक्त गुरुजनो सेहि नय" (४७२)

२ "तुझ्या नामाचा महिमा। तुज न कळे पुरुपोत्तमा" (तुकाराम)
"आपुन नामर महिमाक हरि
आपुनि अन्त नपान्त" (४१५)

३ "सेवा-चोर पाया पाशी" (तुकाराम)
"मइ मन्दमति भैलो सेवा-चोर" (१५१)
यही "सेवा-चोर" शब्द और भी दो जगह आया है (७५, १५६)।

४ नामघोपा है तो असमिया भापा मे, लेकिन मैने कही-कही उसमे, मराठी ही पढ लिया। जैसे—

"साधुसग अनुसरा श्रवण-कीर्तन करा
परिहरा पाषण्ड-आचार" (२०५)

इसका मराठी मे तर्जुमा करने के लिए कुछ भी बदल करने की जरूरत नही।

यह तो मराठी के साथ तुलना हुई। ऐसी ही तुलना अन्य भाषाओ के भक्ति-साहित्य के साथ भी हो सकेगी। मिसाल के तौर पर—

५ तमिल भक्त-शिरोमणि नम्माळ्वार ने, (जिनका नाम शठकोपन् था), गाया है—"तोडर् तोडर् तोडर् तोडन् शठकोपन् ।" इसका अनुवाद ही नीचे का वाक्य होगा—
"दासर दास तान दास भैलो आमि" (१०६)।

दोनो का मूल सस्कृत "दासदासानुदास" शीर्षक मे दिया ही है।

६ राम से भी "राम-नाम" बडा, यह तुलसीदासजी का विचार, राम-चरित-मानस के करोडो पाठको को परिचित और प्रिय है। राम-चरित-मानस के आरभ में, नाम-महिमा गाते हुए, रामायण के समान उन्होने एक "नामायन" ही लिख डाला है। उसीका थोडे मे दर्शन कर लीजिये—"अनत शकति तुमि राम ' " इत्यादि दो घोषाओ में (४४९, ४५०)।

नामघोषा का यह अतरग-निरीक्षण मैं इतने में समाप्त करना चाहता हूँ। ग्रथ-प्रवेश के लिए वह पर्याप्त है।

माधवदेव का चरित्र जानने की इच्छा पाठको को हो सकती है। इसलिए, एक अति सक्षिप्त परिचय, अलग से दे दिया है। वास्तविक, जो

१९. माधवदेव का चित्र

ग्रथ, लोक-मानस में, आर्ष-वाणी (स्क्रिप्चर)-सा बन गया हो, वह व्यक्ति-विशेष के जीवन से सपृक्त नही रह सकता। फिर भी आधुनिको को उस प्रकार की जिज्ञासा रहती है, इसलिए दे दिया है। माधवदेव के जीवन का चित्र,

नामघोपा के एक पद्य मे मिल जाता है—"हरि-भक्ति के राजमार्ग मे, हम आनदित होकर घूम रहे हैं। गुरु-पद-नखचद्रिका का सौम्य प्रकाश, मार्गदर्शन के लिए उपलव्ध है। श्रुति जननी के पद-चिह्न दीख रहे हैं। गिरने का कोई सवाल नही" (३४८)। यह चित्र असम की यात्रा मे, सतत मेरी आँख के सामने रहा। इसलिए, वहाँ के मेघाच्छन्न वातावरण मे भी, कोई दिन, मुझे "दुर्दिन" नही मालूम हुआ (२०७)।

अत मे, जिस घोषा का जिक्र मैने हमारे असम-प्रवेश के पहले दिन किया था, उसका यहाँ फिर से स्मरण करता हूँ—

"अधमे केवले दोप लवय, मध्यमे गुण-
२० गुणग्रहण दोप लवे करिया विचार
उत्तमे केवले गुण लवय, उत्तमोत्तमे
अल्प गुण करय विस्तार" (४००)

श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

भूदान-पदयात्रा,
वालगीर जिला
(ओडिसा)
१६-११-'६३

असमिया आवृत्ति की प्रस्तावना

हमारी पद-यात्रा का 'मुख्य उत्पादन' है भूदान-ग्रामदान। पर उसके साथ-साथ उसमे दूसरे अनेक गौण उत्पादन होते रहते हैं। महापुरुष श्री माधवदेव के 'नामघोषा' की यह संक्षिप्त आवृत्ति, वैसा एक गौण उत्पादन है। पद-यात्रा के लिहाज से तो वह गौण है, लेकिन लोकोपयोग के ख्याल से गौण नही। भारत के हृदय को जोडने का काम उससे अपेक्षित है।

दस साल की पद-यात्रा के बाद, ५ मार्च १९६१ के दिन, हमने रमणीय असम प्रदेश मे प्रवेश किया। तब से अब सालभर बीत गया। यहाँ के समाज के साथ एकरूप होने की 'देहे मने प्राणे' हमने कोशिश की। उसका एक अंश था, असमिया के आध्यात्मिक साहित्य का अध्ययन।

दो महापुरुषो को इस भूमि ने जन्म दिया, जिनका नाम यहाँ तो घर-घर चलता है, यद्यपि भारत के बहुत से लोगो को उनका पता नही। इसमे किसीका दोष नही। ईश्वर की योजना में हर चीज का एक मौका होता है। उसी मौके पर वह चीज बनती है। वह मौका अब आया दीखता है। महापुरुषो ने लोकहृदय-सम्पर्क के हेतु से प्रादेशिक भाषा में लिखा। लेकिन प्रादेशिक अभिमान उन्होने नही रखा था। 'भारत भूमित जनम लभिया' (घोषा*–२७८) 'भारत रत्नर द्वीप' (घोषा–४०७) इत्यादि अनेक वचन उनकी विशाल भावना के निदर्शक हैं। इतना ही नही, जिस तरह आजकल हम 'जय जगत्' कहते हैं, वैसा ही वे कहते थे, 'अपवर्ग-योग्य नर-

* 'नामघोषा' के श्लोकों को 'घोषा' कहते हैं।

तनु पाया पृथिवीत' (घोपा–१०३), ऐसी भापा विश्वात्मा वनकर ही वे वोल सकते थे।

असमिया के आध्यात्मिक साहित्य का मेरा जो वहुत ही थोडा अध्ययन हुआ है, उसमे 'नामघोपा' ने मुझे विशेप आर्कापित किया। उस पुस्तक को मैने अनेक वार पढा। उसके कई वचन मेरे कठ मे वैठ गये। उसकी सगति मे मुझे मित्र-सगति का आनन्द मिला। उमका मैने अपने लिए एक सक्षेप कर लिया, जो सव साधको के उपयोग के लिए प्रकाशित करने का सोचा गया।

मूल सहस्र पद्यो मे से इसमे ५५६ पद्य चुने है। सख्या-अकन दूसरे प्रकार से किया होने के कारण पद्य-सख्या ५०० हो गयी है। ३० अध्यायो में और २०० खण्डो मे उसे विभाजित किया है। मुख्य तीन विभाग वनाये है —(१) प्रार्थना (२) उपदेश (३) महिमा। प्रथम विभाग में भगवत्-प्रार्थनाएँ, भक्तहृदय की व्याकुलता, आत्मनिरीक्षण आदि का समावेश किया है। दूसरा और तीसरा विभाग पूर्णतया विभक्त नही है। उपदेश में महिमा मिलेगी, महिमा में उपदेश का भी अश मिलेगा। 'प्राधान्येन निर्देश', इस नियमानुसार वे विभाग है। तर्कशास्त्र में जिस तरह का विश्लिष्ट चिन्तन होता है, वैसा भक्ति मे नही होता। भक्ति मे सश्लिष्ट और समन्वित चिन्तन होता है। इसलिए ये विभाग अन्योन्य-मिश्र से है—इन्द्र-धनुष्य के रगो के समान!

विभाग, अध्याय, खण्ड आदि रचना मे पद्यो का आज का क्रम स्वाभाविक ही वदल गया है। वोतल मे रखी हुई दवा पीने के पहले हिला करके पीनी चाहिए, ऐसा औपधोपचार का रिवाज ही है।

माधवदेव ने वरगीत भी लिखे है। हर वरगीत के अन्त मे उनका नाम अकित है, जैसा कि ऐसे भजनो मे हमेशा हुआ करता है। नामघोपा मे उनका नाम चार दफा आता है। ग्रन्थ-समाप्ति मे एक दफा तो अपेक्षित ही है, पर और तीन दफा क्यो आया होगा ? नामघोषा को तीन विभागो मे मैंने विभाजित किया, उसको आशीर्वाद के तौर पर यह पूर्व-योजना की गयी, ऐसा मैंने मान लिया।

अध्यायो और खण्डो के नाम जो असमिया मे है, स्पष्ट ही है। कुछ नाम सस्कृत मे दिये है, जो पुराने ग्रथो से लिये गये है। कुछ साकेतिक है, जिनका अर्थ समझ लेने के लिए चिन्तन की जरूरत रहेगी। उदाहरणार्थ 'रत्नत्रय' (अध्याय–२४)। बौद्ध, जैन आदियो ने अपने-अपने ढग से 'रत्न-त्रय' की कल्पना की है। जैनो मे, 'रत्नत्रयधारी' ऐसा बच्चो का नाम भी रखते है। नामघोषा मे 'रत्नत्रय' एक विशिष्ट वैष्णव-सकेत है। (१) सर्वत्र गुणदर्शन (खण्ड–१५९), (२) पुरुषार्थ-प्रेरणा (खण्ड–१६०) और (३) विधि-मुक्ति (खण्ड–१६१), ये भक्तिमार्गीय रत्नत्रय है। दूसरा उदाहरण 'विघ्नत्रय' (खण्ड–१४९)। अन्तर्नाद-श्रवण (घोषा–३८०) में तीन विघ्न आते है—विविध पुण्यासक्ति (घोषा–३८१), विषय-वासना (घोषा–३८२), व्यर्थ-विचार (घोषा–३८३)। इस तरह जहाँ साकेतिक नाम होगे, वहाँ पाठको को चिन्तन से उनका खुलासा कर लेना चाहिए।

इसमे लिये हुए पाठ अक्सर श्री नेओग की आवृत्ति मे से है। अन्य प्रकाशनो में से भी कुछ लिये है। एक जगह मैंने अपनी ओर से, मूल सस्कृत पद्यानुसार, पाठ-सशोधन किया है (घोषा–३४०)।

अध्यायो में 'गीता-निर्णय' नामक १८वाँ अध्याय पाठको का ध्यान खीचेगा। इसमें से अनेक पद्य नामघोषा में एक स्थान मे है और कुछ अन्य

स्थानो से एकत्रित किये गये हैं। माधवदेव का गीता का निष्कर्ष श्रीधर-भाष्यानुसारी है (घोपा—३३०)। 'गीता ही एकमात्र शास्त्र है' ऐसी अपनी निष्ठा ग्रथकार ने व्यक्त की है (घोपा—३०५)।

नामघोपा के जो पद्य यहाँ लिये हैं, उनमें कम-से-कम आधे पद्य अन्यान्य सस्कृत ग्रन्थो से लिये गये है। बाकी के उनके हृदय के सहजोद्गार हैं। दोनो समीचीन और हृद्य हैं। असमिया साहित्य मे तो शायद नामघोपा अद्वितीय ही है। भारतीय भापाओ मे भी उसका अपना एक स्थान रहेगा।

भगवन्नाम-स्मरण को मुख्य केन्द्र बनाकर उसके इर्द-गिर्द अनेक जीवन-मूल्यो को माधवदेव ने सूचक ढग से ग्रथित किया है। उनका विवरण यहाँ देने की आवश्यकता मै नही मानता। मेरे कई भापणो में इसके अनेक पद्यो का सहजभाव से विवरण हुआ है। उतने से मै फिलहाल सतोष करना चाहता हूँ।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

भूदान-पदयात्रा,
सुवर्णश्री अचल
(असम)
२२-२-'६२

विनोबा का
जय जगत्

महापुरुष श्री माधवदेव का अल्प जीवन-परिचय

असम के उत्तर लखीमपुर जिले मे, महापुरुष श्री माधवदेव का जन्म सन् १४८९ मे हुआ। उनके पिता का नाम गोविन्द था, और माता का नाम मनोरमा था, जो महापुरुष श्री शकरदेव की बहन थी।

माधवदेव का बचपन बहुत कष्ट मे गुजरा। बचपन मे ही वे खेतीबाडी के काम मे लग गये। पन्द्रह साल की उम्र में, लगान वसूल करने के काम मे, मदद करने लगे। वर्तमान पाकिस्तान के रगपुर जिले मे, उनका, सस्कृत, व्याकरण, न्याय, तर्क, आदि शास्त्रो का, और पुराणो का, अध्ययन हुआ।

पिता के देहात के बाद, उन्होंने, सुपारी और पान का, व्यवसाय आरभ किया। राज्य के पूरब से लेकर पश्चिम तक, वे नौका से कारोबार चलाने लगे। इन्ही दिनो में उनका, श्री शकरदेव से सबध आया। माधवदेव शाक्त विचार के थे। श्री शकरदेव के साथ चर्चा करने के बाद उन्होंने, शकरदेव का शिष्यत्व ग्रहण कर लिया। इस समय उनकी आयु ३२ वर्ष की थी, और शकरदेव की ७२।

अब माधवदेव व्यवसाय छोडकर गुरु-सेवा में मग्न हो गये। पाडित्य के साथ ही उनमें, काव्य-स्फूर्ति भी थी। और वे सगीत-शास्त्र के भी ज्ञाता थे। इनके सम्मिलित होने से, वैष्णव-सत्र (मठ), और असम प्रदेश, हरि-कीर्तन की ध्वनि से गूंज उठा।

इससे आहोम राजा क्षुब्ध हो गये। क्रुद्ध पुरोहित-वर्ग ने भी, राजा को इस नव वैष्णव धर्म के खिलाफ उभाडा। राजा ने उन्हें पकडने के लिए सेना भेजी। सेना माधवदेव को, और शकरदेव के दामाद हरि भूञा को, पकडकर ले गयी। हरि भूञा की हत्या की गयी, और माधवदेव को ६ मास कैद में रखा गया।

सोलहवीं सदी के आरभ में, पश्चिम कामरूप में, कोच-राज्य का उदय हुआ। कोचराजा नरनारायण, विद्यानुरागी और धर्मपरायण पुरुष थे। कैद से छूटने के बाद, माधवदेव आहोम-राज्य छोडकर, कोच-राज्य में चले

गये। वहाँ वर्तमान वरपेटा के नजदीक सत्र की स्थापना करके, भक्ति-प्रचार करते रहे।

माधवदेव प्राय अपने गुरु के साथ ही रहा करते थे। शकरदेव ११९ वर्ष का दीर्घ जीवन जीकर, सन् १५६८ मे कोच-राज्य की राजधानी कुचविहार मे, वैकुठ पधारे। उनके बाद २८ साल तक माधवदेव कार्य करते रहे। बीच-बीच मे उन्हे राजकोप भी सहना पडा। सन् १५९६ में १०७ वर्ष की अवस्था मे, कुचविहार में ही, उनका महाप्रयाण हुआ। माधवदेव आजीवन ब्रह्मचारी रहे।

प्रचार का कार्य मुख्यत माधवदेव ने ही किया। एक प्राचीन कवि ने लिखा है

"शकरे भकति प्रकाशिला मात्र
माधवेसे प्रचारिला।"

इसका सबूत असमभर फैले वैष्णवो के सत्र है। उनमें से अधिकाश सत्रो की स्थापना, माधवदेव ने की है। भाद्रपद मास के वदी पचमी को, इस महाभागवत की, सारे असम में, श्रद्धा-भक्तिपूर्वक, पुण्यतिथि मनायी जाती है।

नामघोषा-सार के व्याकरण की संक्षिप्त रूपरेखा

असमिया व्याकरण, हिन्दी मराठी गुजराती के जैसा जटिल नही। इन भाषाओ मे, लिंग-विचार के कारण जो तकलीफे होती है, उनमे असमिया आदि पूर्वी भाषाएँ बरी है। नामघोषा तो और ही सरल है। क्योकि उसमे बहुत सारे शब्द, संस्कृत या संस्कृतोद्भव है। इनके अलावा दूसरे शब्द, घोषा-सार मे बहुत ही थोडे है।

विभक्ति आदि के प्रत्यय जोडने मे भी, खास कठिनाई नही। इसलिए यहाँ पर, विकरण की विधियो मे न पडकर, जो रूप आये है, उनकी वर्गीकृत तालिकाएँ देकर, हमने समाधान माना है।

ग्रथ पढना शुरू करने के पहले, इन तालिकाओ पर सरसरी नजर डाली जाय, तो पढते-पढते आशय समझने में मुश्किल नही होगा। कठिन शब्दो के अर्थो के लिए, आखिर में, कोश है ही।

विभक्ति–

१ महेशे, मृत्युवे – पापमाने, पितृगणे

२, ४ भकतक, जगतके, छेदिवाक

३ उपदेशे, कृपाये

५ वैकुंठरपरा, अधर्मतो, देहार, देवकीत हन्ते, (अपेक्षा) मोत परे, ब्रह्मतो करि

६ नामर, गुणेर

७ मुक्तित, सेवाते, चरणे, शय्या माजे, पजर भितरे

नोट—प्रथमा में 'मान' और 'गण' लगाकर बहुवचन किया है।

सर्वनाम–

'मइ' के रूप : मइ, आमि, हामो, मोक, मोके, आम्हाक, आमाक, मोरे, मोत परे, मोर, मोहोर, मेरि, मोरे, आमार, आम्हार, हामारे, मोते, आम्हात

'तुमि' के रूप — तइ, तुमि, तोमाक, तोम्हात, तोक, तोर, तोमार, तोमारे, तोम्हार, तोम्हारे, तजु, तुवा, तव, तोम्हात, तोमात, तोमाते

'जि' के रूप — जि, जिटो, जेइ, जाक, जारा, जार, जाहार, जारे, जात

'इ' के रूप — इ, इटो, एहि, आक, आके, इहाक, आर, इहात, आत।

'से' के रूप — सि, सिटो, सेइ, सेहि, तेहो, तारा, तारामवे, ताक, ताके, ताको, ताहाको, तार, ताहारो, तान्त, ताहान्त, तान, ताने, ताहान, ताहाने, तामवार, ताक, ताहाक, ताहारामवारो, तात, ताते, ताहाते

'आपुनि' के रूप — आपुनि, आपुन, आपुनो, आपुनाक, आपुनाके, आपुनार

प्रश्नार्थक : कौन — कोन, कोने, कोनन्नो, काक

क्या — किनो, कि, किवा

क्यो — केने

कैसा — कमन, कमने, केमने, केनमते, किमते, केने, केन, किनो, किना

कहाँ — कैंक

कितना — कत, कतनो, कतवा, कतो

किसलिए — किवातरे, किसक

धातुरूप—

वर्तमान

उ० पु० — मागो, मागोहो, कहओ, रओ, आछि

म० पु० — आछा, आछाहा, वोलय, भर, जानस, हुयाछ

तृ० पु० — आछे, आछय, आसे, हय, होवे, भुजावे, मुहियाछे, सेवत, निगदति, जाय

भूत

उ० पु० – भैलों, भैलोंहो, पाइलों

म० पु० – भैला, भैलाहा, भैलि

तृ० पु० – करिल, करिले, करिलेक, हुगइल, नियाइलेन, भैल, करिल

भविष्य

उ० पु० – करिबो, एगाइबो, हुइबोहो

म० पु० – पाइबा, पाइवि

तृ० पु० – हैव, हैबे, हुइबे, हैबेक, वुलिबेक

आज्ञा-पार्थना – कर, करा, करियो, करियोक, करिओ, करहु, करायो
(प्रे०) देखा, भिजाव

इच्छा-अनुज्ञा – होक, हौक, हुयोक, आचरोक

विधि – वुलिय, जानिवा, जानिवाहा, करिते उचित, करिते
जुवाइ, क्षमिवे जुवाइ

नकार – धातुरूप के आरभ मे, न, नि, नु, ने, नो, लगाकर,
जैसे–नकर, निविहिला, नुहे, नेदे, नोहय इ०

शक्य – "पार" इस शक्यार्थी धातु के रूप लगाकर,
जैसे–तारिते पारे, छेदिवाक नपारे, करिवे पारे

कृदत–

पूर्वकालवाचक– करि, करिया

वर्तमान कृदत– थाकत (ओ)

भूत कृदत– लैले

शब्द के अन्त मे प्रयुक्त, "से" का अर्थ "ही" होता है। जैसे–तोम्हारेसे, तेवेसे, भकतेमे इ०।

शब्द के अत में, "भी" के अर्थ में, "ओ", कभी स्वतत्र रूप से लगता है, और कभी अन्त्य अकार में मिल जाता है। जैसे–लक्ष्मीओ, मुकुतिको इ०।

अध्यायानुक्रमणिका

खण्डानुक्रमणिका

अध्याय ७ काकूति

अध्याय ८ · मिनति

अध्याय ९ · दैन्य

अध्याय १० : कारुण्य

२ . उपदेश

अध्याय ११ रहस्य

अध्याय १२ साधना

अध्याय १३ लोक-प्रवाह

अध्याय १४ · भक्ति

अध्याय १५ बुद्धियोग

अध्याय १६ मूढजन-स्वभाव

अध्याय १७ जन्म-साफल्य

अध्याय १८ : गीता-निर्णय

अध्याय १९ : पद-पन्थ

अध्याय २० : नीति

अध्याय २१ . निगमन

३ : महिमा

अध्याय २२ . कीर्तन-श्रवणादि

अध्याय २३ : निश्चय

अध्याय २४ . रत्नत्रय

संशोधन

पृष्ठ			
१२५	दायक	=	(दाय शब्द की द्वितीया) माग, दावा
१२६	पाश	=	दूर
१२६	वाहुड (र्)	=	वापिस देना, नष्ट करना (जन्म)
१२७	समे	=	साथ, समेत
२०९	'पुरुपार्थशिरसी' के वदले 'पुरुपार्थशिरसि' पढ़ें		

नामघोषा-सार

१. प्रार्थना

१. प्रार्थना

१. मङ्गलाचरण

१ मुक्तित निस्पृह जिटो सेहि भकतक नमो
रसमय मागोहो भकति
समस्त-मस्तक-मणि निज भकतर वश्य
भजो हेन देव यदुपति

२ जार राम-कृष्ण-नाम-नावे भव-सिन्धु तरि
पावे परम्पद पापी जत
सदानन्द सनातन हेनय कृष्णक सदा
उपासा करोहो हृदयत

२. अन्तर्यामी-गुरु प्रार्थना

३ तुमि चित्त-वृत्ति मोर प्रवर्तक नारायण
तुमि नाथ मइ नाथवन्त
चरण-छत्रर छाया दिया दूर करा माया
करा दाया मोक भगवन्त

४ तुमि मोर अन्तर्यामी तजु भृत्य भैलो आमि
जानि कृपा करा हृषीकेश
दान्ते तृण तुलि लओ जिमते सेवात रओ
दियो मोक सेहि उपदेश

५ तुमि भक्त-कल्पतरु बाहिरे भितरे गुरु
तुमि विने नाहि मोर आर
कृपा करा हे हरि चरणत रक्षा करि
दियो मोक सेवा-रस-सार

६ तुमि हरि कृपामय बाहिरत गुरु-रूपे
अनुग्रह करि आछा मोक
अन्तर्यामी गुरु रूपे ताके सत्य करा, मोर
तजु नामे सदा रति हौक

३. साधन-श्रम परिहार

७ हे भगवन्त गुरु तजु पदे मन मोर
जिकालत थितिक लभय
तोम्हार कृपात तेवे समस्ते साधन-श्रम
एराइ सुखी हुइबोहों निश्चय

८ हे प्रभु नरहरि तोम्हार चरण दुइ
प्रेमभावे स्मरण दुर्लभ
यथाकथञ्चित-रूपे अहर्निशे प्रभु मोर
सुमरण हुयोक सुलभ

९ हे प्राण-बन्धु कृष्ण कृपार सागर हरि
कृपा-दृष्टि चाहियोक मोक
सहज वासना-रूप शरण दियोक नाथ
मोर अहङ्कार दूर होक

४. भक्ति-प्रसाद

१० नमो राम कृष्ण हरि नारायण निरञ्जन
नमो देव दैवकी-ज्ञायाद
परम अनाथ आमि तोमार चरणे नमि
मागो प्रभु भकति-प्रसाद

११ ब्रह्मा हर पुरन्दर आदि देव निरन्तर
जात सदा पशय शरणे
आर आन नाहि त्रिभुवने
भकतजनर वन्धु तुमिसे करुणा-सिन्धु
मोर गति तोमार चरणे

५. माया-निस्तार

१२ मायार निग्रहे मइ परम आतुर भैलो
प्राण यदुपति यदुपति
अनाथर नाथ हरि तुमि कृपामय विने
मोर आर नाहि आन गति

१३ तोम्हात विमुख हरि हैवार देखिया माया
मोर मति करिले मोहित
एवे हरि तजु पदे सेवाते जिमते रहो
हेन कृपा करिते उचित

१४ नमो नमो नारायण प्रसन्न हुयोक हरि
करियोक मायाक निर्याण
आपुनार महिमाक आपुनि वेकत करि
जीवक करियो परित्राण

१५ तोम्हार मायाये हरि कपट गुणक धरि
मुहियाछे आम्हाक समूलि
गुचायोक माया स्वामी तोम्हार चरणे आमि
भजिलोहो जय जय वुलि

६. अपराध-विनाशन

१६ मइ अनाथक दाया करहु परमानन्द
दास वुलि धरियो मनत
थैयो निज भृत्यर सङ्गत
आङ्गुलि मुखत करो दान्ते तृण तुलि धरो
केश छिण्डि देओ चरणत

१७ अपराध-विनाशन तजु नाम नारायण
जानि नामे पशिलो शरणे
आन गति नाहिके मरणे
अपराध क्षमा करि तुमि दायाशील हरि
मोक रक्षा करियो चरणे

७. क्षमापन

१८ हे प्रभु भगवन्त डटो ससारत जत
आछे पापी तार मइ सीमा
चरणे थापियो मोक पतित-पावन निज
देखा कोन नामर महिमा

१९ मोर सम पापी लोक नाहिके इ तिनि लोक
तुमि सम नाहि पाप-ह्वारी
इ जानि गोविन्द मोक जेन जुवाइ करियोक
तुवा पदे करोहो गोहारि

२० सहस्र सहस्र आति अपराध दिने राति
करो मइ महामूढजन
आमि प्रभु तजु दास आके मानि जगवास
क्षमियोक श्रीमधुसूदन

२१ धर्मक जानोहो मइ तथापि प्रवृत्ति नाइ
अधर्मतो निवृत्ति नोहय
हृदि-स्थित हुया तुमि जेन करावाहा स्वामी
हृषीकेश करिवो तेनय

२२ नजानोहो आवाहन नजानोहो विसर्जन
पूजा मन्त्र नजानो किञ्चित
एतेके परमेश्वर दास भैलो चरणर
मोर गति साधिवे उचित

---

२. शोधना

८. अनुनाथना

२३ तोम्हारेसे अविद्याये आम्हाक मुहिले हरि
नजानोहो तोम्हार तत्त्वक
तोम्हार चरणे हरि शरण पशिया सार
करिलोहो तोम्हार नामक

२४ हे कृष्ण तुमि मात्र चैतन्य-स्वरूप नित्य
सत्य शुद्ध ज्ञान अखण्डित
आवर जतेक इटो तोम्हार विनोद रूप
चराचर मायार कल्पित

२५ तजु गुण नाम हरि केवले निर्गुण मात्र
आवर समस्ते गुणमय
एतेक जानिया हरि तोम्हार नामक मात्र
करिलोहो सार कृपामय

९. आत्म-सम्बोधन

२६ हे जिह्वा सदा तोर मधुरेसे मात्र प्रिय
जान तइ रसर सारक
आन तेजि निरन्तरे करियोक मात्र पान
नारायण-नाम-अमृतक

२७ हे जिह्वा तइ सदा आम्हात निर्दया भैलि
केने नोवोलस राम-वाणी
ससार-सागरे इटो हरिसे सुदृढ नाव
जानि हरि वुलियो कल्याणी

२८ हे कर्ण सदा तोर शवद मात्रसे प्रिय
तइ शब्द मधुर जानस
कोटि अमृततोधिक परम मधुर शब्द
शुन सदा कृष्ण-नाम-यश

२९ हे मन तोर काम सङ्कल्प-विकल्प-धर्म
तेजि मिछा व्यापारसकल
सदाये सङ्कल्प मात्र करियो सुहृद मन
कृष्ण-नाम परम मङ्गल

३० शुनियो हृदय हेर ब्रह्माण्ड भितरे जत
बस्तु आछे तोक नोजोडय
ताक तेजि कृष्ण-नाम अक्षय अमृत पिया
सन्तोषक लभियो हृदय

३१ शुनियोक बुद्धि तोर केवले निश्चय धर्म
तेजि सबे बिनाशी बिषय
सदा शुद्ध सुमङ्गल अक्षय कृष्णर नाम
ताके मात्र करियो निश्चय

३२ शुन हेर अहङ्कार निचिन्त आपुन मार
मिछा अहम्ममक तेजियो
परम ईश्वर कृष्ण हुयोक ताहान दास
साधु-सङ्गे कृष्णक भजियो

३३ शुनियोक चित्त हेर परम रहस्य वाणी
तुमि शुद्ध ज्ञानर आलय
कृष्ण नित्य शुद्ध बुद्ध परम ईश्वर देव
नाछाडिबा ताहान आश्रय

३४ कृष्ण निष्ट इष्टदेव आत्मा प्रियतम गुरु
सुहृद सोदर बन्धुजन
कृष्णे मोर मति गति कृष्णत भकति रति
कृष्ण-पावे निमजोक मन

१०. समुद्र-द्वय

३५ शान्त चिदानन्द शुद्ध अनन्त-महिमान्वित
निर्मल तरङ्ग-चय-हीन
हेनय परमानन्द अमृत-सागरे मजि
आचान्त नकरे वुद्धि-क्षीण

३६ हे हरि सार-शून्य मृगतृष्णार्णव-जले
महा श्रान्त हुया मोह पाओ
स्नान पान आचमन करोहो रमण ताते
कतोहो उपङ्गो तल जाओ

११. वेत्र-प्रहार

३७ हरिर गृहर द्वारे वेत्रर प्रहार योग्य
ब्रह्मा इन्द्र आदि देवजाक
हेनय द्वारत वेत्र-प्रहार पाइवार योग्य
हओ आमि कमन वराक

---

३. विनय

१२. शरण

३८ मइ दुराचार केवले तोम्हार
अपराधी नारायण
क्षमियोक हरि लैयो दास करि
पशिलो हेरा शरण

३९ हे कृष्ण स्वामी तजु पावे आमि
केवल शरण चाओ
करा अनुग्रह मायार निग्रह
तेवेसे प्रभु एराओ

४० हे यदुपति मइ मूढ-मति
नजानो सेवा तोम्हार
केवल तोम्हार चरण-पङ्कजे
शरण करिलो सार

४१ पुरुष-उत्तम परम-पुरुष
परम-आनन्द स्वामी
तजु पाद-पद्म-मकरन्द आशे
शरण पशिलो आमि

४२ प्रभु भगवन्त अनन्त ईश्वर
प्रपन्न-जन-तारण
तुमि प्रियतम परम देवता
जानिया लैलो शरण

१३. भजन

४३ जय जय जय कृष्ण कृपामय
भजिलो तोम्हार पावे
तोम्हार चरण-पङ्कजत मन
मजोक मोर स्वभावे

४४ जय जय राम जगत-कारण
जगत-जीवन स्वामी
परम देवता जानिया तोम्हार
चरणे भजिलो आमि

४५ अनादि अनन्त हे भगवन्त
भजो करि प्रणिपात
मुकुति-रसको तेजि महाजने
शरण लवे तोम्हात

१४. नमस्कार

४६ नमो कृष्णदेव पापी वुलि केव
मोक मोर नोवोलय
पतित-पावन जानिया तोम्हात
आपुनि गैलो विक्रय

४७ नमो हरि-पद-पङ्कज-युगल
विमल सुख-सागर
अनादि अनन्त सन्त सदाशिव
भगवन्त भव-हर

४८ मोह माया राग मद मल काम
दम्भ द्वेष आदि भाव
जि गुरुजनत इसव नथाके
प्रणामो ताहाने पाव

४९ नमो नित्यानन्द जगत-कारण
वासुदेव भगवन्त
नित्य शुद्ध बुद्ध काम अनिरुद्ध
पुरुष प्रभु अनन्त

५० राम निरञ्जन दानव-गञ्जन
भकत-रञ्जन देव
तुमिसि परम गुरु नारायण
तुवा पावे करो सेव

---

४. अनुनय

१५. आतुर-प्रार्थना

५१ तुमि सर्वसाक्षी आत्मा हृषीकेश
जानाहा मोर चित्तक
शरणागतक मइ आतुरक
उपेक्षा करा किसक

५२ हे कृष्णदेव मइ आतुरक
चरणे करा उद्धार
तिनि तापमय ससार-निकार
सहिते नपारो आर

५३ ए भव-सागरे मजि नारायण
आतुर भैलो आपार
दीन अनाथक तुमि कृपामय
चरणे करा उद्धार

५४ हरि ओ हरि करुणा-सागर
करिओ कृपा आम्हाक
प्रियतम आत्मा सखा इष्ट देव
मानिया आछो तोम्हाक

५५ हे हरि मइ अनाथक दाया
करा हरि एकबार
कृपा-रसे तिन्ति अरुण-वरण
चरण भैल तोम्हार

५६ हे भगवन्त भजोहो तोम्हार
अभय पद-कमले
मइ-अनाथक राखियो ईश्वर
अरुण-चरण-तले

১৬. পতিত-পাৱনী

৫৭ হে হৰি মোক দুৰাচাৰ বুলি
নকৰিবা পৰিহাৰ
তুমি বিনে মহা-পতিত-পাৱন
কোন দেৱ আছে আৰ

৫৮ চৰণত ধৰো কাতৰ কৰোহো
ইবাৰ নেৰিযো হৰি
পতিত-পাৱন দেৱ নাৰায়ণ
নাহিকে তোম্হাৰ সৰি

৫৯ হে হৰি তজু মাযাযে আমাক
ভাণ্ডিছে কৰি কপট
দূৰ কৰা মাযা চাপোহো তোম্হাৰ
চৰণ-ছত্ৰ-নিকট

৬০ পতিত-পাৱন ৰাম নাৰায়ণ
চৰণে মোক উদ্ধাৰা
আমি পতিতৰ পতিত-পাৱন
নামৰ পৰীক্ষা কৰা

৬১ কৃপাৰ সাগৰ দেৱকী-নন্দন
পূৰিযো মনৰ কাম
ভকতৰ সঙ্গে সদা নুগুচোক
মুখে তুৱা গুণ নাম

৬২ কোটি কোটি ঘোৰ অপৰাধ নিতে
কৰো আমি দুৰাশয
হে হৰি মোক দাস হেন মানি
ক্ষমিযোক কৃপামময

१७. गुचायो कुमति दियोक सुमति

६३ अनादि अनन्त अचिन्त्य ईश्वर
तुमिसे नित्य निर्मल
गुचायो कुमति भजोहो केवले
तोम्हार पद-कमल

६४ बाहिरे भितरे तुमि हरि गुरु
आछाहा चैतन्य-रूपे
दियोक सुमति तुमि बिने गति
नाहिके कैलो स्वरूपे

१८. निर्मल रति

६५ नमो नमो राम कृष्ण प्रभु देव
तुमि मोर निज गति
हुयोक सदय जिमते रहय
तोम्हात निर्मल रति

६६ नमो नमो कृष्ण तोमार भकति
मुकुतितो करि बले
मोर ताके मन दियोक शरण
अरुण-चरण-तले

६७ हे कृष्ण कृपामय प्रभु मोक
करा कृपा एहिमान
तोम्हार चरणे रहोक आम्हार
सदाय निर्मल ज्ञान

६८ जय जगवन्धु जगत-कारण
नारायण निराकार
केवले तोम्हार चरण-पङ्कजे
रहोक रति आम्हार

६९ दीन-दायाशील देव दामोदर
दीनक नेरियो मोक
हेन कृपा करा तजु पावे मोर
सहजे रति मिलोक

७० तोम्हार चरण-सेवार गोविन्द
नजानो एको उपाय
जिमते सेवात रहिवो करुणा
करिते हरि जुवाइ

७१ हे प्राण हरि दान्ते तृण धरि
मागोहो तोम्हार पावे
मोर मन मजि तोम्हार पावत
रहोक हरि स्वभावे

१९. सङ्कटमोचनी

७२ जर ताप पीडा मरण समये
करा हरि कृपा मोक
तजु गुण-नाम श्रवण-स्मरण-
वचन-गोचर होक

७३ गोपिनीर धन व्रजर जीवन
मोहन राम गोविन्द
परम सादरे शिरे तुलि धरो
तजु पद-अरविन्द

२०. वयस गोवाइलो

७४ काल-ग्रस्त हुया भैलो अचेतन
वयस गोवाइलो हेले
वान्धव कृष्णर नामक नलैलो
हरि-भकतर मेले

७५ तुमि नित्य निरञ्जन नारायण
आमिओ अश तोमार
तजु सेवा-चोर पाया महामाया
मुहिले मन आमार

७६ किनो अपराध करि आछो आमि
माधव वान्धव प्राण
नाम धरि डाको हियात थाकिया
केने नेदा समिधान

२१. अमोघ अपराध

७७ कतनो अमोघ अपराध हरि
करिया आछो प्रचुर
वुद्धित थाकिया नेदाहा सुवुद्धि
कृपार हुया ठाकुर

७८ जिहेतु तोम्हार चरण-पङ्कजे
नभजिलो नारायण
सिहेतु अनादि अविद्या आम्हार
करिले ज्ञान उछन्न

७९ तुमि निज पितृ गुरु इष्टदेव
नभजो तोम्हार पावे
एहि दोषे मोक यम-दूते धरि
यातना दुख भुन्जावे

८० तुमि प्रिय आत्मा परम देवता
तोमात भैलो विमुख
एतेके तोम्हार मायाये आम्हाक
दिलेक ससार-दुख

---

५. आर्ति

२२. नियन्ता माधव

८१ प्रकृति पुरुष दुइरो नियन्ता माधव
समस्तरे आत्मा हरि परम वान्धव
नमो हरि नारायण राम राम राम
सर्व-धर्म-शिरोमणि तुवा गुण-नाम

२३. अमूल्य भक्ति

८२ हे प्राण-वन्धु कृष्ण कृपार ठाकुर
अणु एक करा दाया माया हौक दूर
जय जय कृपामय देव यदुपति
तोमार चरणे मागो अमूल्य भकति

८३ पतित पड़िया रैलो ए भव-सागरे
पतित-पावन नाम भैल किवा तरे
अरुण चरणे मइ पापीक तारियो
पतित-पावन नाम साफल करियो

८४ आतुर भैलोहो हरि विषय-विकले
करियो उद्धार मोक चरण-कमले
हे कृष्ण कृष्ण नाथ करा परित्राण
तनु-नाव वुरि आसे नाहिके गियान

८५ नाम-धन दिया मोके किना वनमाली
दास पाया नलवा कमन ठाकुरालि
निज दास करि हरि मोके किना किना
आन धन नलागय नाम-धन विना

८६ जय जय राम कृष्ण शरण तोम्हार
कृपार सागर कृपा करा एकबार
दियो दरिशन पावे पशिलो शरण
भकतजनर धन तुमि नारायण

२४. कमने भजिबो हरि

८७ कमने भजिवो हरि चरण तोम्हार
दुर्घोर मायाये मन मुहिले आम्हार
हे हरि मोरे प्राण-जीवन मुरारि
अनाथर नाथ भकतर भयहारी

२५. केशवादि नामावलि

८८ केशव कमलाकान्त अनन्त अनादि
नित्य निरञ्जन शुद्ध बुद्ध वेद-वादी
जय जय जगत-जनक जगजीव
अनन्त अच्युत सनातन सदाशिव

---

६. उद्‌बोधन

२६. श्रेष्ठ-निरञ्जन-सुन्दर-पावन

८९ कृष्ण एक देव दुख-हारी काल मायादिरो अधिकारी
कृष्ण विने श्रेष्ठ देव नाहि नाहि आर
सृष्टि-स्थिति-अन्तकारी देव तान्त विने आन नाहि केव
जानिबा विष्णुसे समस्त जगते सार

९० नमो नमो नित्य निरञ्जन नारायण शिव सनातन
अनादि अनन्त निर्गुण गुण-नियन्ता
परम पुरुप भगवन्त नाहि पूर्वापर आदि अन्त
तुमिसे चैतन्य समस्त भव-भावन्ता

९१ ब्रह्मा महादेव लक्ष्मीदेवी काय-वाक्य-मने थिर करि
परम आनन्दे चरण सेवन्त जार
सदा जन्म-जरा-मृत्यु-हीन श्रीमन्त सुन्दर गुणनिधि
विष्णुत विनाइ कोन देव आछे आर

९२ जार पादोदके देवी गङ्गा जार वाक्ये हुया आछे वेद
परम पतितो तरय जाहार नामे
सृष्टि-स्थिति-प्रलयर जिटो परम कारण नारायण
हेन ईश्वरक नभजय कोन कामे

२७. पार-पारः

९३ अपार ससार सिन्धु आर विष्णुसे परम पार, जत
पार आछे ताते परम्परमात्मा रूपे
तेन्ते तुमि जाना ब्रह्म-पार पर-पार-भूत जत पार
तासम्बार पार विष्णुसे पार स्वरूपे

२८. अभ्यर्थना

९४ वसुदेव निगदति हासि साक्षाते विदित भैल आमि
तुमिसि पुरुष-प्रकृतितो करि पर
समस्ते जीवर बुद्धि-साक्षी केवल-आनन्द अनुभव
स्वरूपे सुखर सागर देव ईश्वर

९५ हे कृष्ण जत जीव नित्य तिनि तापे हुया सन्तापित
दुर्घोर ससार-तापत परि आछय
तजु पद श्वेत-छत्र-प्राय अमृत वरिषे सर्वदाय
तार छाया बिने नेदेखो आर आश्रय

९६ वलि निगदति यदुपति राम राम राम राम राम
किनो कृपा मोक करिलाहा नारायण
देवरो दुर्लभ आतिशय राम राम राम राम राम
गृहते थाकिया देखिलो तजु चरण

२९. चेतना

९७ ब्रह्मा आदि करि जीव जत राम राम राम राम राम
माया-शय्या माजे आछय घुमटि जाइ
तुमिसे चैतन्य सनातन राम राम राम राम राम
आमि अचेतन नियोक नाथ जगाइ

९८ क्षुद्र सुखे वहु आशा करि भव-कूपे जीव आछे परि
काल-सर्पे दशि हराइल चेतन तार
मोक्ष-रूप तजु वाक्यामृत कृपाये सिञ्चिया प्रति नित
दायामय कृष्ण करियो ताक उद्धार

३०. गजेन्द्र-मोक्ष

९९ सरोवरे ग्राहे धरि आछे गजेन्द्रे पीडाक पाया पाछे
आकाशे गरुड-कन्धे चक्र धरि हरि
देखि सुवर्णर पद्म धरि बोले दुखे आर्तनाद करि
नमो भगवन्त गुरु लैयो दास करि

३१. कृष्ण-पञ्जर

१०० हे कृष्ण तजु पाद-पद्म-पञ्जर भितरे मोर मन-
राजहस पशि थाकोक प्रभु सर्वथा
प्राण-प्रयाणर समयत कफ वात पित्त आदि जत
कण्ठ-निरोधने तोमार स्मरण कथा

३२. वानप्रस्थाश्रम

१०१ हे कृष्ण पुत्र-पत्नी-सङ्ग तेजि तजु पद चिन्ति नित
गर्व-शून्य सन्तसवर आश्रमे जाइवो
तासम्वार मुख-पद्मे वाज हुइवे तजु कथामृत-नदी
ताते मग्न हुया देहार हात एडाइवो

३३. खेद

१०२ आपुन नामक वहुतर करि निज सर्व शक्ति दिया
कालर नियम निविहिला स्मरणत
एतादृशी तव कृपा हरि मोहोर दुर्दैव देखा किनो
अनुराग प्रभु नभैल तजु नामत

१०३ कत महादुखे पुण्य करि अपवर्ग-योग्य नर-तनु
पाया पृथिवीत विषयत मजि रैल
इटो खेद हरि-सेवा तेजि आपुनाक आत्मघात करि
सिटो महापापी आपुनि वञ्चित भैल

३४. निजगृह

१०४ चारियो वेदर चारि अक्षर सार काढि आनि ब्रह्मादेवे
वेकत करिया थैला नारायण-वाणी
सेहि नारायण-नाम गाया शुद्ध करो आमि चित्त-काया
हरि-सन्तोषर कारण आन नजानि

१०५ कृष्ण-यशे चित्त-धौत हुया समस्ते क्लेशक तरि पुनु
कृष्ण-दासे कृष्ण-चरण-मूल नेडय
सकले सम्पूर्ण निज-गृह पथिकसकले पाया पुनु
दुख एडाइ जेन सिटो गृह नछाडय

३५. दासदासानुदास

१०६ नोहो जाना आमि चारि जाति चारिओ आश्रमी नोहो आति
नोहो धर्मशील दान-व्रत-तीर्थ-गामी
किन्तु पूर्णानन्द-समुद्रर गोपी-भर्ता-पद-कमलर
दासर दास तान दास भैलो आमि

---

७. काकूति

३६. सत्ये सत्ये पशिलो शरण

१०७ यादव यदु-नन्दन माधव मधु-सूदन
तुमि नित्य निरञ्जन नारायण
तोम्हात लैलो शरण

१०८ इवार करुणामय हरि कमलापति
मोरे नछाडिवा नारायण
अरुण चरण-तले हरि कमलापति
सत्ये सत्ये पशिलो शरण

१०९ हरि-चरणत शरण लैलो । ए हरि नारायण
मानवी जनम साफल कैलो । ए हरि नारायण

३७. भुवन-मोहन

११० भुवन-मोहन राम भजिलो तोमार पाव
महा महा पापी जार नाम जपि
उत्तम पदक पाय

१११ राम कृष्ण नारायण निरञ्जन निराकार
निर्विकार निरामय हरि
चिदानन्द सदानन्द पुरुष परमानन्द
भजो तुवा चरणत धरि
हरि राम विभु प्रभु अनन्त दैत्यारि

३८. भकति-प्रदीप चाओं

११२ किमते भकति करिबो तोमात हरि ए
मइ मूढ-मति नजानो तार उपाय। राम राम
महाबलवन्त दुर्बासना घोर हरि ए
आमार मनक तेजिया दूर नजाय। राम राम

११३ तोमार मायाये मन मुहि आछे हरि ए
अज्ञान-आन्धारे परिया पार नपाओ। राम राम
अभय चरणे शरण पशिलो हरि ए
तुवा गुण-नाम-भकति-प्रदीप चाओ। राम राम

११४ भकति मिनति प्रणति नजानो हरि ए
मोत परे ज्ञान-शून्य हीन-मति नाइ। राम राम
तुमि प्रभु कृपा-रसेर सागर हरि ए
दियो मोक तुवा पद-छाया-तले ठाइ। राम राम

३९. नजानो एत दिन

११५ हरि ए करुणा-सिन्धु जीवन-बन्धु
गति मति तुमि नारायण
तुवा गुण-नाम भकतर महाधन

११६ पतित वुलिया मोके हरि हरि ओ राम
तेजिते नपारा नारायण
परम करुणा-गुणे हरि हरि ओ राम
नाम धरिछा पतित-पावन

११७ मोके कृपा करा हरि ए
दान्ते धरो तृण माथे धरो तृण
तुमि कृपामयक नजानो एत दिन
मोके कृपा करा हरि ए

४०. काकूति-वाणी

११८ पतित-पावन वुलि नारायण ए
परम पतितें डाकय आतुर हुया
तजु वेद-वाणी आमि आछो शुनि ए
महा महापापी तरे तजु नाम लैया

११९ तुवा गुण-नाम अमृत-आशाय ए
तोमार चरणे बिका गैलो मूढमति
चरणत धरो कातर करो ए
मइ अनाथक नछाडिबा यदुपति

१२० तोमार सेवक भैलो नारायण ए
निचय तोमार दिबाक लागे प्रसाद
निज भृत्य करि लैले गोपीनाथ ए
तजु कृपामय मिलय कोन प्रमाद

१२१ हे दायाशील देव दामोदर ए
तोमार चरणे बोलोहो काकूति-वाणी
मोक निज दास करि लैले हरि ए
कहियो कृपाल तोम्हार कि हय हानि

१२२ परम कृपालु हुया यदुपति ए
किनो अपराधे मोक भृत्य परिहरा
शास्त्रतो प्रसिद्ध अज्ञानतो हरि ए
जिटो नाम लवे ताके मोर वुलि धरा

१२३ ज्ञान-शून्य आति पशु-पक्षी जाति ए
ताको अनुग्रह करि आछा कृपामय
आके जानि हरि शरणे पशिलो ए
आमाक तोम्हार तेजिते उचित नय

१२४ तोमारेसे निज भृत्य भैलो हरि ए
कृपार सागर तुमि मोर निज स्वामी
मइ अनाथक नवञ्चिबा हरि ए
तजु सेवा-रस आशा करि आछो आमि

१२५ बेदर गुपुत बित्त नारायण ए
देवकीत हन्ते साक्षाते भैल विदित
जीवर तरण-हेतु नारायण ए
प्रचारिला निज यश-धर्म बिपरीत

१२६ भकतर वश्य हुइवार शङ्काय ए
जोनो मोक तुमि दास परिहरा हरि
इटो शङ्का हरि दूरते तेजिया ए
लैयोक तोमार भृत्यर अधीन करि

१२७ तोमार नामर महिमा देखिया ए
आन जत काम दूरते तेजिया थैलो
तजु पद-सेवा-रसक आशाय ए
तोमार एकान्त भृत्यर किङ्कर भैलो

१२८ सहज-कृपालु-गुणक प्रकाशि ए
धरि आछा हरि भकत-वत्सल नाम
धेनु जेनमते वत्सक पालय ए
तुमि सेहिमते भकतक पाला राम

४१. स्वातन्त्र्यापराध

१२९ आमि जत जीव तोमार पालन
हरि हरि हरि हरि ए
तुमिसे पालिया फुरा हुया अन्तर्यामी
आवे जेवे निज भृत्य वुलि पाला
हरि हरि हरि हरि ए
तेवेसे कृपाल कृतकृत्य हओ आमि

१३० तुमि जाक पाला सिओजन आमि
हरि हरि हरि हरि ए
ससार-निकार भुञ्जिया फुरो वहुत
तोमार अधीन हुया कोने आमि
हरि हरि हरि हरि ए
भैलोहो स्वतन्त्र इटो किनो अदभुत

१३१ तोमाक परम ईश्वर नमानि
हरि हरि हरि हरि ए
महा अहङ्कारे द्रोह आचरिलो आमि
आवे तजु पदे शरण पशिलो
हरि हरि हरि हरि ए
मइ द्रोहियार दोप क्षमा करा स्वामी

१३२ दास हुया तजु सेवा नकरिलो
हरि हरि हरि हरि ए
इटो घोर अपराधर चिकित्सा नाइ
तुमि पुनु प्रभु सहज-कृपालु
हरि हरि हरि हरि ए
शरण पशिलो क्षमिवे प्रभु जुवाइ

---

८. मिनति

४२. शकतिर पति

१३३ अचिन्त्य अनन्त शकतिर पति
हरि हरि हरि हरि ए
तुमि कृपामय देव अगतिर गति
तुमि सत्य सनातन सदाशिव
हरि हरि हरि हरि ए
तोमार चरणे मागोहो निर्मल रति

४३. अबिद्या-सागरे मजिलो

१३४ यादव यदु-नन्दन मुकुन्द मुरबिनाशी
अविद्या-सागरे मजिलो माधव
उद्धार करियो आसि

१३५ जीवन यादवराय सेवोहो तोमार पाय
राम नेरिबा नफर-दाय
तुवा पावे रति जिमते करिबो
दियोक नाथ उपाय

१३६ यादव जय यदुपति तोमार चरणे लागो
श्रवण-कीर्तन निर्मल भकति
काकूति करिया मागो

१३७ जय यदुपति यादव तुमि अगतिर गति
दान्ते तृण धरि तोमार चरणे
मागोहो साधु-सङ्गति

१३८ दीन-दायाशील यादव सेवक लैयो उद्धारि
दान्ते तृण करो चरणत धरो
नेडिवा मोक मुरारि

४४. करुणासागर+करुणासिन्धु

१३९ करुणामय करुणासागर कृपार करुणासिन्धु
तोमार कृपार आमि नोहो पात्र
तुमि पुनु दीनवन्धु

१४० मोर प्राण-वन्धु गोविन्द सेवक करिया लैयो
आन एको काम नमागो, तोमार
भृत्यर सङ्गत थैयो

१४१ राम कृष्ण हरि गोविन्द दीन-दायागील स्वामी
तोमार चरणे सहज वासना
शरण मागोहो आमि

१४२ राम कृष्ण हरि गोविन्द सेवक भैलो तोमारे
अभय चरणे शरण पशिलो
चुरियो माया हामारे

१४३ गोविन्द गोपाल गोपीनाथ दया नछाडिवा मोरे
अपार ससार आर नाहि पार
मजिलो ए दुख घोरे

४५. मने लैलो सार वाछि

१४४ राम राघव रघुपति ए
तुमि देव अगतिर गति ना हे
तुवा पद-कमलर मकरन्द-रसे रति
करिया थाकोक मोर मति ना हे

१४५ जय जय यदुपति ए
तुवा पावे पशिलो शरण ना ए
भाल कथा शुनि आछि मने लैलो सार वाछि
तुवा नाम पतितपावन ना ए

४६. सच्चिदानन्द

१४६ चिदानन्द राम सदानन्द हरि
नित्यानन्द कृष्ण मोक लैयो दास करि

१४७ हरि ओ तुमि आनन्द-सिन्धु
हामो भिक्षारी मागो एक विन्दु

४७. निर्गुण गुणधाम

१४८ ए राम राम कृष्ण राम नारायण
तजु पद-कमले मजोक मेरि मन
ए राम राम कृष्ण राम कृष्ण राम
तुमि गुण-नियन्ता निर्गुण गुणधाम

---

९. दैन्य

४८. कि काम करिलो आमि

१४९ ए हरि हरि हरि हरि
कि काम करिलो आमि
साधु-सङ्ग लैया तोमाक नभजि
भैलो किनो अधोगामी

१५० निज दास हुया सेवाक तेजिलो
एइ दोषे घोर आपदे मजिलो
तुमिसि सुहृद आत्मा प्रियतम
तोमाक नभजो कि मइ अधम

१५१ तुमि निज पितृ गुरु इष्ट मोर
मइ मन्दमति भैलो सेवा-चोर
अधमको तारे तोमार भकति
तथापि तोमाक नभजो कुमति

१५२ इष्ट देव बुलि तोमाक नधरो
निकार भुञ्जिया ससारते मरो
तुमिसे केवले करुणा-सागर
तोम्हाक नभजो कि मइ पामर

१५३ आवे कृपामय दियोक शरण
दोष मरिषण तोमार चरण
इवार ईश्वर नछाडिबा मोक
मोर मन मजि तोमाते रहोक

४९. अनात्मनि आत्मबुद्धिः

१५४ दुर्वार दुःसङ्ग दुर्वासना दुष्ट
हरि हरि हरि हरि ए
अनादि अविद्या आपुनि भैलो मोहित
अनात्मा देहक आत्मा-बुद्धि करि
हरि हरि हरि हरि ए
तुमि परमात्मा ईश्वरे भैलो वञ्चित
१५५ आत्यन्तिक सुख तजु पद-सेवा
हरि हरि हरि हरि ए
सेवा परिहरि सि सुखे भैलो वञ्चित
मायामय घोर संसार-निकार
हरि हरि हरि हरि ए
ताके सुख मानि मग्न भैल मोर चित्त

५०. प्राणप्रभु पीताम्बर ए

१५६ तुमि प्राण-प्रियतम सुहृद परम देव
प्राण-प्रभु पीताम्बर ए
तुमिसे केवले आत्मा मोर
हरि हरि तुमिसे परम आत्मा मोर
तोमाक नजानि जड मिछा शरीरक मइ
प्राण-प्रभु पीताम्बर ए
आत्मा बुलि भैलो सेवा-चोर
प्राण-बन्धु किना मइ अज्ञानी दुर्घोर हरि ए

५१. मोर प्रभु नारायण ए

१५७ तुमि नित्य शुद्ध वुद्ध निर्मल निर्गुण देव
मोर प्रभु नारायण ए
स्वरूप आनन्दे सदा सुखी
हरि हरि तुमि निजानन्दे सदा सुखी
आमि मूढमति घोर अविद्या-सागरे मजि
मोर प्रभु नारायण ए
तोमाक नजानि भैलो दुखी
हरि हरि स्वरूप नजानि भैलो दुखी हरि ए

१५८ अखण्डित सदा शुद्ध चैतन्य-शक्तिर वले
मोर प्रभु नारायण ए
तुमि दूर करि आछा माया
हरि हरि तोमार निकटे नाहि माया
तोमाक नभजो पदे मायाये मुहिले मोक
मोर प्रभु नारायण ए
आवे कृपामय करा दाया
हरि हरि मायाक निवारि करा दाया हरि ए

१५९ हे कृष्ण तुमि निज आत्मा प्रियतम गुरु
मोर प्रभु नारायण ए
परम ईश्वर भयहारी
हरि हरि तुमि इष्ट देव भयहारी
एतेके जानिया तजु चरणे शरण लैलो
मोर प्रभु नारायण ए
नछाडिवा ड्वार मुरारि
हरि हरि लैयो मोक मायाक निवारि हरि ए

५२. दीनबन्धु दामोदर ए

१६० देवकी-नन्दन देव देवकी-नन्दन देव
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि चरणे उद्धार करा मोक
प्राण-बन्धु इवार नेडिबा हरि मोक
भकति मिनति तुति प्रणति नजानो मइ
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि आवे मोर केन गति होक
प्राण-बन्धु मोर मन तोमात रहोक हरि ए

१६१ मनुष्य-योनिर कर्मे नि शेष योनित फुरि
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि वारे वारे भुञ्जिलो अपार
दीनबन्धु कतवा भुञ्जिलो नाहि पार
इवेलि तोम्हार दुइ चरणे शरण लैलो
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि नकरिवा मोक परिहार
प्राण-बन्धु चरणत राखियो इवार हरि ए

१६२ पुनु पुनु नर-तनु लभिया तोमाक तेजि
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि ससारे भ्रमिलो असख्यात
दीनबन्धु कतबा करिलो आयाजात
इवेलि करुणामय तोमार किङ्कर भैलो
दीनबन्धु दामोदर ए
हरि हरि रति मोर रहोक तोमात
प्राण-बन्धु चरणत करो प्रणिपात हरि ए

---

१०. कारुण्य

५३. भाल भारसा पाया आछि

१६३ रामर नामेसे अमिया झुरे
भकत-जन-मनोरथ पूरे

१६४ भाल भारसा पाया आछि हरि करुणामय
राम कृष्ण कृपार ठाकुर
राम बुलिते पापी तरे हरि करुणामय
सकल आपद होवे दूर

१६५ भकतसवे राम-नाम गावे
काल-माया डरे तरतरावे

५४. दुगुटि अक्षर=बिज्ञानप्रदीप+अनपायिनीभक्ति

१६६ दुगुटि अक्षर राम-नाम
श्रीराम-नाम अमिया-माधुरि झुरे
अति सुकोमल परम मङ्गल
सवे मनोरथ पूरे

१६७ जय जय नित्य निरञ्जन
नित्य निरञ्जन देव शिव सनातन
परम अभय तोमार चरण
ताप-तिनि-विनाशन

१६८ हे कृष्ण दीन-दायाशील
दीन-दायाशील दाया नछाडिबा मोक
अज्ञान-तिमिर नाशिया
विज्ञान-प्रदीप प्रभु दियोक

१६९ हे प्राण-प्रभु कृष्णदेव
प्रभु कृष्णदेव दीनक करियो दाया
परम तापिते मागोहो तोमार
शीतल चरण-छाया

१७० प्राण प्रियतम यदुदेव
दियो मोक एहि दान
करायो तोम्हार चरण-सेवार
सन्तोषे अमिया-पान

१७१ नमो राम कृष्ण सदाशिव
कृष्ण सदाशिव तुमि जगतर पतिं
अपाय-रहित मागोहो भकति
चरणे करि प्रणति

५५. अनादि-स्तोत्र

१७२ अनादि अनन्त हरि ए जीवन-बन्धु
राम-कृष्ण करुणा-सागर
अनाथर नाथ दायाशील दामोदर

१७३ परमपुरुष हरि ए परमानन्द
परमकारण नारायण
भकत-रञ्जन तजु अरुण चरण

१७४ जयति जगत गुरु ए गुणेर निधि
नित्य निरञ्जन निराकार
तोम्हार चरणे सदा शरण आमार

१७५ जगत-जीवन यदु ए यादवानन्द
जगत-कारण यदुपति
तुमिसे केवले निज भकतर गति

१७६ भकत-वत्सल प्रभु ए भकत-बन्धु
भकत-रञ्जन भयहारी
भकतर निज गति तुमिसे मुरारि

१७७ पतित जनर गति ए जगतपति
पतित-पावन भगवन्त
परम ईश्वर देव अनादि अनन्त

५६. करियो कृपा जेन उचित हय

१७८ करुणामय राम करुणामय
करियो कृपा जेन उचित हय
तुमिसे राम कृपा-रसेर निधि
तोम्हार कृपा विने नाहिके सिद्धि

१७९ सहजे तुमि राम करुणा-सिन्धु
तोमात विने आन नाहिके वन्धु
तोमार कृपा-लेशे आमार गति
कहय माधव मूरुख-मति

---

२. उपदेश

११. रहस्य

५७. एकान्त-भक्ति

१८० एकान्त भकतसवे निर्गुण कृष्णर गुण
गावे सदा बसिया जथात
बैकुण्ठक परिहरि योगीरो हृदय एरि
थाका हरि साक्षाते तथात

१८१ अव्यक्त ईश्वर हरि किमते पूजिवा ताङ्क
व्यापकत किवा विसर्जन
एतावन्त मूर्तिशून्य केनमते चिन्तिवाहा
राम बुलि शुद्ध करा मन

१८२ कर्मत विश्वास जार हियात थाकन्तो हरि
आतिशय दूर होन्त तार
दूरतो विदूर होन्त तार
अहङ्कार थाकन्तेओ साक्षाते कृष्णक पावे
श्रवण कीर्तन धर्म जार

५८. भक्ति-गौरव

१८३ जिटोजने शुद्धभावे हरित शरण लैया
हरिक सुहृद बुलि आछे
हरिर प्रसादे सिटो विघ्निर मुण्डत भरि
दिया हरि-गुण गाया नाचे

१८४ जिटोजने कृष्ण-कथा विचारे समये मने
धैर्य धरि क्षणेक थाकय
जत तीर्थ-स्नान दान देव-पितृ-यज्ञ याग
योगादिरो फलक पावय

१८५ जार पुत्रसवे ऐत हरित शरण लैया
हरि-गुण गावे शुद्धभावे
दधि दुग्ध घृत मधु नदीर जलक पिया
पितृगणे तृपितिक पावे

५९. नार्थवादः

१८६ सेहिसे चतुर जिटो पुण्यर निदान-भूत
नारायण-नामक उच्चरे
अचतुर सिसि आति पापर निदान-भूत
नामे अर्थवाद जिटो करे

६०. महेश-दृष्टान्त

१८७ महेशे वोलन्त मोर रकारादि नाम शुनि
परम प्रसन्न होवे मन
शुनियो पार्वती मइ मनत शङ्कओ रङ्गे
राम बुलिवेक इटो जन

६१. पावन-मूर्ति

१८८ विष्णु-पादोदक गङ्गा महेशे सहिते इटो
जगतके पवित्र करय
हेन कृष्ण विने कोन भगवन्त हेन इटो
शवदर स्वरूप आछय

१८९ अपवित्र जिटो आति पवित्र होवेवा यदि
समस्ते अवस्था आछे पाया
कमललोचन जिटो सुमरे तारेसे शुद्ध
वाहिरे भितरे होवे काया

६२. शरद्वत्

१९० कर्ण-पथे भकतर हियात प्रवेशि हरि
दुर्वासिना हरे समस्तय
जलर जतेक मल जेहेन शरत-काले
स्वभावते निर्मल करय

६३. हेन महेश्वर विष्णु

१९१ ब्रह्मा आदि देवगणे निचल सम्पत्ति मने
लक्ष्मीक सेवन्त तप करि
लक्ष्मीओ सेवन्त जाक हेन महेश्वर विष्णु
आन कोन देव ताङ्क सरि

६४. जडराशि-प्रवर्तक

१९२ जिहेतु चैतन्य-पूर्ण परमात्मा-रूपे हरि
हृदयत आछन्त प्रकाशि
तातेसे इन्द्रियगण भूत प्राण वुद्धि मन
प्रवर्ते जतेक जडराशि

६५. निगम-तत्त्व-सार

१९३ राम-कृष्ण-हरि-नाम सर्व-धर्म-अनुपाम
सकल निगम-तत्त्व-सार
जात परे धर्म नाहि आर
हेन नाम नुसुमरि कमन भारसा करि
रैया आछा भव तरिवार

१९४ सकल निगम लता तार अविनाशी फल
कृष्ण-नाम चैतन्य-स्वरूप
सुमधुर सुमङ्गल श्रद्धाये हेलाये लैया
नर मात्र तरे भव-कूप

६६. निष्कामो वा सकामो वा

१९५ कृष्णर नामक सदा कीर्तन करय जिटो
मने दृढ करिया निश्चय
निष्काम होक वा यदि सकाम होवय ताक
कदाचितो कलि नबाधय

६७. निज-यशः-प्रिय प्रभु

१९६ चाण्डाल पर्यन्त करि जगतर उपकारी
नाहि नाम-गुण विने आन
सेहिसे कारणे हरि निज-यश-प्रिय भैल
भगवन्त भकतर प्राण

६८. नाम-सिंह

१९७ पुण्य-अरण्यर माजे माधवर नाम-सिंह
प्रकाश करय आति वडे
जार ध्वनि शुनि भये महापाप-हस्तीचय
पलाय आति त्रासत लवडे

---

१२. साधना

६९. आशा-परित्यागः

१९८ दुर्लभ मनुष्य-तनु लभिया पशुर योग्य
विषयर आशा परिहरा
सन्तर सङ्गत वसि सुखे हरि-गुण गाया
सन्तोष-अमृत पान करा

१९९ विषय-सम्बन्ध-सुख समस्ते योनिते पाय
हरि-सेवा एको थाने नाइ
हरिर सेवार योग्य केवले मनुष्य-तनु
जानि फुरा हरि-गुण गाइ

२०० लुब्ध-मति मनुष्यर हरि-कीर्तनत पर
नाहिके रहस्य-वित्त आर
आन आशा परिहरि माधवक मने धरि
हरिर कीर्तन करा सार

२०१ सेहिसे सकले शास्त्र पढिले शुनिले सिसि
अनुष्ठान समस्ते करिल
निराशा ईश्वर कृष्ण ताहाङ्क समुख भैल
आशाक जिजने पिठि दिल

७०. मुक्त-साधना

२०२ हरि-नाम-कीर्तनत नाहि देश काल पात्र
नियम सयम एको विधि
हरित शरण लैया केवले हरिर नाम
कीर्तन करन्ते होवे सिद्धि

৭১. मृत्युञ्जय

२०३ मृत्युर मुखत परि आछे जिटो सिटो नरे
हरि-गुण-कीर्तन नकरे
मृत्यु तरिवार जाना नाहिके उपाय आन
हरि-नाम-कीर्तनत परे

२०४ मृत्यु तरिवार जत आछय उपाय आन
विघिनि-दूषित निरन्तरे
विघिनि-रहित जत माधवर गुण-कर्म
कीर्तन करन्ते सुखे तरें

७२. सभ्यजनाः शृणुत

२०५ शुना सभासदचय नेरिवा शास्त्रर नय
हरि-गुण भागवत-सार
साधु-सङ्ग अनुसरा श्रवण-कीर्तन करा
परिहरा पाषण्ड-आचार

७३. ग्राम्यकथा वि० हरिकथा

२०६ ग्राम्य-कथा-विनाशन उत्तम श्लोकर गुण
प्रसवय साधुर सङ्गत
ताक अनुदिन जिटो सेवे तार सती मति
होवे वासुदेव-चरणत

२०७ सेहिसे दिनक भाइ दुर्दिन वुलिया मानि
मेघाच्छन्न नोहय दुर्दिन
हरि-कथा-अमृतर सम्यक-आलाप-रसे
जिटोदिन होवय विहीन

७४. वैराग्य-भाग्य

२०८ वैराग्यत परे भाग्य नाहि, प्रबोधत परे
सुख आर नाहि पुरुषर
हरि विने परित्राण-कर्ता आर नाहि जाना
रिपु नाहि ससारत पर

७५. लक्ष्मीनिरपेक्ष सेवानन्द

२०९ लक्ष्मीपति भगवन्त जाहार प्रसन्न भैला
ताहार दुर्लभ किछु नाइ
नारायण-पर भैले तथापि किञ्चितो आन
नवाञ्छय सेवा-सुख पाइ

७६. चरणाधिकार

२१० कृष्णर हृदय चारु लक्ष्मीर निवास-थान
मुख नयनर पान-पात्र
दिगपाल समस्तर आश्रय कृष्णर वाहु
भकतर पाद-पद्म मात्र

७७. नम्रता

२११ परम ईश्वर देव कृष्णक नपावे लाग
तप जप याग योग दाने
एकान्त भक्तर पद-रेणु शुद्ध-चित्ते माथे
अभिषेक नकरय माने

७८. साक्षात्कार

२१२ आत्मा-ईश्वरक लाग प्रत्येके सतते पाइ
नपाड जाना ताङ्क अविद्यात
अविद्या नगिले लाग कृष्णक पावय जेन
कण्ठ-लग्न वस्तुक साक्षात

---

१३. लोक-प्रवाह

७९. शब्दशक्ति-कुण्ठन

२१३ नारायण हेन इटो शवद आछय मुखे
वशवर्ती वचन आछय
तथापि अद्‌भुत किनो घोर नरकत मजि
मल-मति मनुष्य मरय

८०. तर्कशास्त्र-महाव्याघ्री

२१४ तर्कशास्त्र-महाव्याघ्री ताहान निपुण पति
तार शिष्य भैल पुत्र-प्राय
ससार बनत पशि पति-पुत्र समन्विते
उपनिषद्-धेनु धरि खाय

२१५ सर्व-श्रुति-शिरोरत्न भागवत-वन माजे
हरि-नाम-सिह प्रकाशय
तार महाध्वनि शुनि निज परियार समे
तर्कव्याघ्री पलाय हुया भय

८१. जडपूजाधमाधमा

२१६ माया आदि करि जत समस्ते जगते जड
कृष्णेसे चैतन्य आत्मा शुद्ध
चैतन्य कृष्णक एडि जडक भजिया मरे
किनो लोक अधम मुगुध

८२. हेन नाम एतिखणे हेला

२१७ तप जप तीर्थ व्रत याग योग यज्ञ दान
काको नुसुमरे मृत्यु-वेला
मरन्ताजनक वेढि बोले सवे राम बोला
हेन नाम एतिखणे हेला

२१८ परलोक-समयर बान्धव हरिर नाम
सव एडि जिहेतु सुमरे
एतिखणे कि कारणे हेनय हरिर नाम
मल-मति नरे नुसुमरे

८३. नामौषध

२१९ दुर्घोर ससार इटो व्याधिर औपध महा
तेजि हरि-नामक सम्प्रति
कमन उपाये आन पण्डितसकले आवे
लभिवेक आपुन मुकुति

८४. 'कोवा कोवा'

२२० गोविन्दक नराधिया कोन काले कदाचित
सुखी हुया आछे कोनजन
हेन शिक्षा मने धरि डाउके बोलय सदा
'कोवा कोवा' कुवाक्य-वचन

৮৫. দাম্ভিক গুরু

২২১ শঙ্করেসে শুদ্ধমত ঈশ্বর-ভক্তির তত্ত্ব
প্রচারিলা শাস্ত্র-সার জানি
তাহাঙ্ক নজানি মূঢে জীবিকার অর্থে ফুরে
আপুনার মহত্ত্ব বখানি

২২২ শঙ্করে সংশয় ছেদি শাস্ত্রর তত্ত্বক ভেদি
প্রচারিলা কৃষ্ণর ভকতি
তাঙ্ক এরি কি কারণে আনক বোলয় গুরু
কিনো লোক মহামূঢ-মতি

২২৩ নজানে শাস্ত্রর নয় জেন আসে তাকে কয়
ছেদিবাক নপারে সংশয়
গুরু বোলাই তথাপিতো ফুরয় লোকর মাজে
মান্য-সতকার খুজি লয়

২২৪ হরি-নাম ধ্বজ করি বেদ-পথ পরিহরি
ফুরে আতি পাষণ্ডসকল
ইহ-পরলোকে ভ্রষ্ট হুয়া পেট পুষি মাত্র
ফুরে আতি পরম নিষ্ফল

८६. वाचनिक भक्त

२२५ वचने केवले मात्र हरित शरण लय
चित्ते आन देवक भजय
जानिवाहा कदाचितो सिद्धि सिटो नलभय
हरि तार सन्तोष नोहय

८७. आगमादि-वाद

२२६ आगम निगम तर्क पुराण भारत जत
इतिहास तन्त्र-मन्त्र-चय
हे हरि तोमातेसे खेलावे केवले वाद
तोम्हार तत्त्वक नजानय

८८. भोगैश्वर्य-मत्त

२२७ ऐश्वर्य भोगर मदे मत्त हुया ईश्वरत
पराङमुख भैल जिटोजन
जेन जीर्ण गाइ सिटो दुर्घोर ससार-महा-
पङ्के परि होवय मगन

---

१४. भक्ति

८९. नामापराध-विनाशन

२२८ राम-कृष्ण-नाम धर्म अनुपाम
सदाय जिटो सुमरे
जत महापाप नाम-अपराध
सवे मपिमूर करे

९०. केवल भक्ति

२२९ मोर भक्ति-युक्त योगीरो जानिवा
मोतेसे चित्त जाहार
ज्ञान कर्म विने केवल भक्तित
पावय ससार-पार

२३० केवल भकति पुरुपक तारे
सहाय काको नचावे
ज्ञाने कर्मे तावे तारिते नपारे
भकति नपावे जावे

९१. आदि मध्य अवसाने

२३१ वेदे रामायणे पुराणे भारते
आदि मध्य अवसाने
हरिकेसे मात्र कहवे निश्चय
जाना तथ्य एहिमाने

२३२ सत्य असत्यर जड चैतन्यर
माजत जिटो प्रकाशे
ताके वुलि मन सेहि सिटो पावे
जिजने जाक उपासे

२३३ माया आदि करि समस्ते असन्त
जानिवा जड निश्चय
हरि मात्र सन्त चैतन्य ईश्वर
परम तत्त्व निर्णय

२३४ हरिसे चैतन्य आत्मा ज्ञानमय
आवर समस्ते जड
वेद वेदान्तर समस्ते शास्त्रर
एहिसे विचार वर

२३५ देवरो दुर्लभ ईश्वर कृष्णक
भकतिसि करे वश्य
आगम निगम गीता भागवत
शास्त्रर एहि रहस्य

९२. वासुदेवाय कृष्णाय

२३६ वासुदेव वासुदेव वासुदेव
वुलिया जिटो सुमरे
सिटो पुरुषर जाना यमराजा
लिखन मार्जन करे

२३७ दिव्य सहस्रेक नाम तिनिवार
पढ़ि पावे जत फल
एकवार कृष्ण-नाम उच्चरिले
पावय ताक सकल

९३. वाघजालि

२३८ यम काल माया मृत्युवे वेढिया
आछे वाघजालि करि
हेनय जीवक कोने तारिवेक
विने कृपामय हरि

२३९ पाप-सागरत तल नियाइलेक
वले कलि दुराचार
राम-नाम विने पाप एराइवार
उपाय नाहिके आर

२४० हरि-गुण-नाम-आनन्द-सागरे
मजायो मन निपुण
सुखे ससारर ताप एराइवाहा
नछारिवा हरि-गुण

२४१ गीघिर करिया बोला राम हरि
विलम्ब नकर भाइ
कोननो नायक यमर दायक
हरिक सुहृद पाइ

२४२ हरि-पदे धर अन्याय नकर
दुर्जन मन पामर
साक्षी हुया हरि हियार भितरे
आछे देव दण्डधर

९४. नाम-अञ्जनीया

२४३ अज्ञान-आन्धारे परिया जीवर
ज्ञान-पथ भैल नाश
नाम-अञ्जनीया विने आनमते
नपावे हरिर पाश

२४४ महन्तसवर सङ्गे राम-नाम
लैयो अञ्जनीया करि
कपट दुवार चूरिया हृदय-
भाण्डारे देखियो हरि

२४५ हरि-पद महाथाली राम-नाम-
अमृते आछे भरिया
कपट ढाकन भाङ्गि आवे भाइ
सन्तोष हुयोक पिया

२४६ राम-कृष्ण-नाम अमृत-सागरे
जिटोजने करे केलि
तृण सम करि निटो महाजने
मुकुतिको थवे ठेलि

---

१५. बुद्धियोग

९५. मनोजय

२४७ महन्तर सङ्गे हरि-कथा-रसे
मनक जिनियो भाइ
मायाक तरिया हरिक पाइवार
–उपाय आवर नाइ

२४८ महन्तर सङ्गे सदाय मुखत
नृछारिवा राम-वाणी
तेवेसे चञ्चल दुराचार मन
हैवे आसि एकाजानि

२४९ आन जत धर्म हरिर नामर
रेणुको नोहे समान
हेन हरि-नाम अमृत-सागरे
सन्तोषे करियो पान

२५० हरिक आश्रय जानिवा निश्चय
सुखर मूल कारण
हरित विमुख दुखर कारण
जानिवा निष्ट वचन

२५१ विधिर किङ्कर जतेक साधन
ताक पाश करि थैयो
विधिर ईश्वर हरि-नाम-गुण
तात्हाते शरण लैयो

९६. शास्त्र-गुरु-शिष्य

२५२ शास्त्र-गुरु-उपदेशे शिष्यसवे
ईश्वरक नेदेखय
बुद्धिक सत्त्वस्थ करिया आपुन
आत्माक देखे निश्चय

२५३ शास्त्र-गुरु-उपदेश-क्रम राम
व्यवस्था-मात्र-पालन
केवले शिष्यर शुध बुद्धि मात्र
ज्ञानर होवे कारण

२५४ गुरु-उपदेश-लब्ध शिष्यसवे
उपदेश सार धरा
जेवे ईश्वरक पाइबा यत्न करि
बुद्धिक सत्त्वस्थ करा

२५५ शास्त्र-गुरुसवे शिष्यक कृपाये
शुध उपदेश दिव
शिष्यसवे शुधभावे नधरिले
तारासवे कि करिव

२५६ जेवे शिष्यसवे महा शुधभावे
उपदेश आचरय
शास्त्र गुरु आपुनाको सिटो शिष्ये
तिनिको रक्षा करय

९७. वज्र-पञ्जर

२५७ हृदय-तम्भत कृष्ण-चरणक
प्रेम-जरी दिया छान्दा
परम सुदृढ राम-कृष्ण-नाम-
कवच गलत वान्धा

२५८ राम-कृष्ण-नाम अभेद कवच
सदाये जिटो पिन्धय
तिनि गुण-वृत्ति अस्त्रर प्रहारे
ताक आर निविन्वय

२५९ हिरण्यकशिपु प्रह्लाद पुत्रक
नानान दुर्गति दिल
हरिनाम-महाकवच-प्रभावे
तान लोम नलरिल

२६० एकान्त शरणे जिटो नाम लवे
फुरा हरि ताङ्क राखि
इहात यद्यपि सञ्जात नजावा
लैयो प्रह्लादत साक्षी

२६१ ज्ञाने वा अज्ञाने माधवर नाम
जिजने फुरे सुमरि
ताक मोर बुलि हाते अस्त्र तुलि
राखिया फुरन्त हरि

२६२ ग्राह-ग्रस्त हुया गजेन्द्रे शरण
लैला त्राहि हरि बुलि
ताहाङ्क तेखने राखिलन्त आसि
हाते हरि चक्र तुलि

२६३ काल-ग्राहे धरि आम्हाको गिलय
चेतन नाहिके मने
त्राहि हरि बुलि पशिलो शरणे
अभय हरि-चरणे

२६४ भृत्य-भय-हारी अपर देवता
नाहि हरि-समसर
प्रपन्नजनर जानिवाहा हरि
वज्रर जेन पञ्जर

९८. मानवजन्म-प्रयोजन

२६५ हरि-गुण-नाम-श्रवण-कीर्तने
भजियो हरि-चरण
मनुष्य हुइवार एहिमाने मात्र
जाना निज प्रयोजन

२६६ मनुष्य-जनम लभिवार फल
हरिर कीर्तन मात्र
हरिर कीर्तन करि महासुखे
होवे भकतिर पात्र

२६७ हरि-गुण-नाम-श्रवण-कीर्तने
करय चित्त निर्मल
हरिर चरणे केवले भकति
लभिवाहा सुमङ्गल

---

१६. मूढजन-स्वभाव

९९. भक्त-निन्दा

२६८ महन्तसवर केवले जीवन
हरिर नाम मङ्गल
हेन हरि-नाम नलैया कलित
करिले जन्म विफल

२६९ हरिर परम प्रियतम नाइ
निज भकतत परे
हेन भकतक जिजने निन्दय
हरिकेसे निन्दा करे,

२७० हरि-भकतर दाय नधरय
यम काल आर कलि
इसव कथाक जिटो नमानय
तिनितो करिया वली

२७१ हरि-भकतर छिद्रक नधरे
दुष्ट-शिरोमणि कलि
हेन भकतर किञ्चितो छिद्रक
सजने थाके आकलि

१००. श्रोतृ-अवलक्षण

२७२ हरि-कीर्तनर समये जिजने
थाके आन कथा पाति
अन्तकाले निया यम-दूते धरि
करे ताक उग्र शास्ति

२७३ वेदर रहस्य हरिर कीर्तन
नुशुनिले सावधाने
यमर किङ्करे तपत शलाक
वाहावे ताहार काणे

२७४ आनन्द-समुद्र हरिर कीर्तने
जिटोजने नेदे चित्त
सिटो मूढमति हरिर दुर्लभ
प्रसादे भैल वञ्चित

१०१. व्यर्थ-पाण्डित्य

२७५ शवद-ब्रह्मर पार भैल जिटो
कृष्णत भकति नाइ
तार शास्त्र-श्रम श्रमे मात्र फल,
जेन राखे वाजी गाइ

२७६ चारिओ जातिर निज पितृ कृष्ण
जानिया जिटो नभजे
एहि पापे निजधर्म-भ्रष्ट हुया
घोर नरकत मजे

२७७ हरिर चरण नभजि नकरे
आपुन दुख खण्डित
परमार्थ-तत्त्व विचारि कहियो
केमने सिटो पण्डित

१०२. गृहासक्ति

२७८ भारत भूमित जनम लभिया
नभजे हरि-चरणे
सिटो ज्ञानशून्य पशुतो अधम
जनम लभिले केने

२७९ आपुन जनम भारत भूमित
लभिलेक जिटो नर
हरिक नभजि करिले विफल
सिटो शोच्य समस्तर

२८० हरिर चरण नभजि केवले
पोपे पुत्र भार्या मात्र
यमराजा बुलिलन्त सेहिजन
यम-यातनार पात्र

२८१ हरिर चरण निचिन्ति चिन्तय
विपयक दिने राति
शास्त्रर सम्मते जाना सेहिजन
भैल निज आत्माघाती

---

१७. जन्म-साफल्य

१०३. हरि बोल

२८२ हरि बोल हरि बोल करि मन थिर
तेवेसे साफल होवे मनुष्य-शरीर
हरि-गुण गाव भाइ आनन्द करि मने
चिन्तामणि-तनु भाइ विफल कर केने

२८३ लैयो हरि-नाम साते-पाञ्चे हुया साजु
आपुन-हुरे पलाइवेक काल-माया वाझु
चेतन लभिया भाइ भजियो हरिक
आन परिहरि हुयो भकति-रसिक

१०४. हरि-गुरु-पद-सेवा

२८४ हरि-गुरु-पद-सेवा-खाण्डा डाटि धरा
मन-वैरी काटि सुखे भव-नदी तरा
सन्त-उपदेशे हरि-चरणे भजियो
हरि-नाम निरमल आनन्दे मजियो

२८५ माधवर राङ्गा दुइ चरणे धरिया
राम-नाम-रस पियो आञ्जलि भरिया
गुणमय साध्य-साधनक परिहरि
कृष्ण-कथा-रस पियो कर्णाञ्जलि भरि

२८६ कृष्ण-पद-सेवा-सुख परम दुर्लभ
हरि-सेवा भैले आन सकले सुलभ
कृष्ण-पाद-पद्म भैल जाहार आश्रय
ताहारेसे गुचय निःशेष दुख-भय

२८७ जत जीव-राशि फुरे कुशलक चाइ
हरि-नाम विने तार महालाभ नाइ
हरि-कीर्तनत जार मिलिल सन्तोष
सर्वसुख-भागी होवे हरे कलि-दोष

१०५. भाविते भाविते राम

२८८ जप राम-नाम भाइ भावकसकल
राम-नाम विने नाइ परम मङ्गल
भावियो भावक भाइ राम-नाम सार
निगमे नकहे राम-नाम विने आर

२८९ जि मुखे वुलिबे राम सि मुखे भण्डार
सदाये भावियो राम भय नाहि आर
नामर भण्डार मुखे भैल कत भागे
आनन्दे भावियो राम जाक जत लागे

२९० भाविते भाविते राम रस चडे।आति
आलास तेजिया राम वोला दिने राति
मने मुखे एक करि सदा वोला राम
लभिवा परमानन्द दूर हैवे काम

१०६. नामे ताहाको नछाड़े

२९१ राम कृष्ण वोल भाइ राम कृष्ण वोल
कोटि कोटि व्रह्माण्डे नामर नोहे मोल
अनन्त रसेर निधि राम-कृष्ण-नाम
मुख भरि भरिया सदाये वोला राम

२९२ सदाये भाविते राम जार रस वाड़े
राम-कृष्ण-नामे आरो ताहाको नछाड़े
राम-कृष्ण-नाम-रसे चित्तक भिजाव
वोल राम कृष्ण हरि तेजि आन भाव

१०७. महोदय

२९३ राम-कृष्ण-नाम जार मुखत थाकय
ताहारेसे जानिवा मिलिल महोदय
राम-कृष्ण-कीर्तन स्वभाव भैला जार
सियो भैला हरिर हरियो भैला तार

१०८. आशा नामे नदी माजे

२९४ हरि-नाम एरि मन कि काम करस
माया-मोह-जाले परि मिछाते मरस
हरि-नाम धर मन हरि-नाम धर
आशा नामे नदी माजे मिछात नमर

२९५ राम-नाम लैयो मन राम-नाम लैयो
मिछा आशा लाज-काज पाश करि थैयो
राम-नाम लैयो मन तेजा आशा आन
भकतर सङ्गे पाता नामर देवान

१०९. विषयर आशा-भङ्गे

२९६ विषयर आशा-भङ्गे भकतर हरिष
देखय विषय-सुख विष्ठार सदृश
विषयर सुख जत सकलो असार
जानिया भकते ताक करे परिहार

११०. नाम-निन्दक 'सज्जन'

२९७ गारो भोट यवने हरिर नाम लय
हेनय नामक केने सज्जने निन्दय
हरि-नामे करे अन्त्य जातिको मुकुत
सज्जने नामक निन्दे किनो अदभुत

२९८ दुखमय क्षुद्र विषयक आशा करि
एकान्ते नभजे पूर्णानन्द महा हरि
आपुनि नलवे नाम आनको निन्दय
कोटि जनमको लागि दुर्घोर सञ्चय

१११. तृण तरु शिला

२९९ मानवी जनम पाइ हरि नभजिला
अवश्ये हैवाहा भाइ तृण तरु शिला
हरि-कीर्तनक जिटोजने हेला करे
आपुनाके आपुनि वञ्चिले सिटो नरे

३०० मृत्युर मुखत परि नभजे हरिक
सिटो अधमर जीवनत धिक धिक
ब्रह्मार प्रार्थनी इटो नर-तनु पाया
नभजिले हरिक वञ्चिले विष्णु-माया

---

१८. गीता-निर्णय

११२. कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्

३०१ हे कृष्ण हे वासुदेव दैवकी-नन्दन हरि
नमो नन्द-गोपर कुमार
कृपामय श्रीगोविन्द तजु पद-अरविन्द
करो मई लक्ष नमस्कार

३०२ पद्म सम नाभि जार प्रणामोहो बारम्बार
नमो दिव्य-पद्म-माला-धारी
नमो पद्म-सम-नेत्र पद जार शतपत्र
नमो भकतर भय-हारी

३०३ वसुदेव-सुत कृष्ण तुमि भकतर इष्ट
कस-चाणूरादि-विमर्दन
दैवकी-हृदयानन्द जगतर गुरु कृष्ण
तजु पावे करोहो वन्दन

११३. गीताशास्त्र

३०४ सकले उपनिपद धेनु दोग्धा भैला ताने नन्द-सुत
तार वत्स भैला कुन्ती-सुत धनञ्जय
दुग्ध भैल महा गीतामृत कृष्णर चरणे दिया चित्त
सुबुद्धिसकले सन्तोपे पान करय

३०५ एकेखानि मात्र शास्त्र निष्ठ देवकी-नन्दने कैला जाक
देवो एके मात्र देवकी-देवीर सुत
देवकी-पुत्रर पद-सेवा कर्मो एके एहिमाने मात्र
मन्त्रो एके तान नाम-मात्र अदभुत

११४. शोक-मोह-महापङ्क माजे

३०६ शोक-मोह-महापङ्क माजे अर्जुन मगन भैला देखि
परम ईश्वर देवता नन्द-नन्दन
कृपाये ईश्वर-तत्त्व कहि उद्धारिला निज भकतक
हेन ईश्वरर चरणे लैलो शरण

३०७ हे कृष्ण धनञ्जय-सखा, वृष्णि-कुल-श्रेष्ठ,दुष्ट-राजा-
वगर दहन, अनन्त-वीर्य गोविन्द
गो-विप्र-देव-दुख-हारी योगेश्वर समस्तर गुरु
नमो भगवन्त तजु पद-अरविन्द

११५. आत्मोद्धार

३०८ आपुनि आपुन वन्धु आपुनि आपुन शत्रु
आपुनि आपुन राखे मारे
हरिक नभजि नरे आपुनि होवय नष्ट
हरि भजि आपुनाक तारे

११६. त्रिविध नरकद्वार

३०९ जतेक अनर्थ आछे ससारत
ताते तिनि विध सार
काम क्रोध लोभ आपुन-नाशन
जानि करा परिहार

३१० आत्मा-नाश-हेतु काम क्रोध लोभ
नरकर तिनि द्वार
जानि आक तेजि केवले कृष्णर
भकतिक करा सार

३११ काम क्रोध लोभ तेजि जिटो जने
भजय कृष्णर पावे
कृष्णर कृपात होवय कृतार्थ
सुखे मुकुतिक पावे

११७. त्रिगुण-निस्तार

३१२ कृष्णकेसे मात्र भजे जिटोजने
अव्यभिचारी भकति
तिनिगुण अतिक्रमि ब्रह्म-रूप
पावे सिटो महामति

३१३ तिनि-गुणमय जत ज्ञान कर्म
केवल बन्ध-कारण
जानि ताक तेजि एकान्त भकति
भजियो कृष्ण-चरण

३१४ रजोगुण तमोगुण जत वृत्ति
केवले आसुरी भाव
शुद्ध सत्त्व वृत्ति देवर सम्पत्ति
लैया भजा कृष्ण-पाव

११८. अपि चेत् सुदुराचारः

३१५ माधवे बोलन्त धनञ्जय महा दुराचारो आतिशय
आन देव तेजि मोकेसे मात्र भजय
ताकेसे परम साधु बुलि मानिबा मनत सर्बक्षणे
जिहेतु सम्यके करिले मोक निछय

३१६ भक्तिर महिमा विपरीत अधर्म तेजिया धर्म-चित
होवे शीघ्रे मोक भजि जाना कुन्ती-सुत
आक जि कुतर्की नमानय तथा गैया वायो वाद्यचय
वाहु मेलि करा अङ्गीकार अदभुत

३१७ मोहोर परम ईश्वरर दुराचार भक्तो नुहे नष्ट
किन्तु सिटो भक्त कृतार्थ आति होवय
तोम्हार प्रगल्भ प्रौढि शुनि समस्ते कुतर्क परिहरि
गुरुत्वे तोम्हाक करिवे सवे आश्रय

३१८ आम्हार निर्मल भकतित दुराचारो तरे कोन चित्र
आम्हाक भजिया चण्डालो तरे ससार
स्त्री शूद्र वैश्य आदि जत विषयत मात्र सदा रत
मोक भजि सुखे इसवे होवे उद्धार

३१९ ब्राह्मण क्षत्रिय पुण्य-तनु मोक भजि तरिबेक पुनु
आत अदभुत नाहिके कोनो संशय
राज-ऋषि-तनु आछा पाया अनित्य असुख लोक जानि
आति शीघ्रे मोक भजा सखि धनञ्जय

३२० मोते मात्र सदा दिया मन मोर भक्त होवा सर्बक्षण
मोके पूजा मोके मात्र करा नमस्कार
कहिलो तोमात सत्य वाणी पाइबा सुखे मोक महामानी
तुमि प्रियतम सुहृद सखि आम्हार

११९. मच्चित्ता मद्गतप्राणाः

३२१ भगवन्त देव निगदति शुनियो अर्जुन महा
तोमात कहओ परम इटो रहस्य
ऐश्वर्य विभूति वले समे जाने जिटो मोक नर
सिओ भैल मोर तार भैलो मइ वश्य

३२२ मोते हन्ते होवे चराचर मोतेसे प्रवर्ते निर
इहाक अर्जुन जाने जिटो महाजन
परम विवेकी सिटोजन मोर भावे हुया युक्त
मोके मात्र भजे श्रवण करि कीर्तन

३२३ मोतेसे केवले दिया चित्त मोते मात्र प्राण अर्पि
अन्योअन्ये मिलि मोकेसे वोध करावे
मोके मात्र कहे सर्वक्षणे परम सन्तोप लभि
आनन्द-सागरे मजि रहे प्रेमभावे

३२४ रहस्यक जाने जिटो लोक सतते कीर्तन करे
धरि दृढ व्रत करि यत्न विपरीत
मोर सर्वोत्तम दुइ पावे करे नमस्कार भक्ति
तार मोर एडा-एडि नाहि कदाचित

१२०. पुरुषोत्तम-योग

३२५ कृष्ण निगदति अर्जुनत देहादिक आमि अति
हैया आछो शुद्ध ब्रह्मतो करि उत्तम
एतेकेसे जाना इटो लोके वेदतो प्रख्यात हुया
मोर नाम इटो प्रसिद्ध पुरुषोत्तम

৩২৬ অসম্মূঢ়ভাবে জিটোজনে উত্তম পুরুষ মোক মানে
তাকে সর্ববেত্তা বুলিয় সখি অর্জুন
সিটো সমস্তকে পরিহরি কায় বাক্য মনে যত্ন করি
ভজয় আমাক পুরুষ সিটো নিপুণ

১২১. পরমার্থ-তত্ত্ব

৩২৭ মাধবে কহন্ত অর্জুনত শুনা ইটো পরমার্থ-তত্ত্ব
ভকতেসে মোর মহিমা জানে নি শেষ
তত্ত্ব-রূপে সখি জানি মোক তরিবা দুর্ঘোর দুখ-শোক
অন্ত-কালে গৈয়া আমাত হোবে প্রবেশ

৩২৮ কৃষ্ণ নিগদতি সব্যসাচী পরমার্থ-তত্ত্ব লবা বাছি
সুদৃঢ় বিশ্বাসে শরণ লৈয়ো আমাত
মোতে মাত্র সদা দিয়া চিত গায়ো মোর গুণ-নাম-গীত
সকলে শাস্ত্রর কহিলো সার সাক্ষাত

১২২. অর্জুনোদ্গার

৩২৯ কৃষ্ণক বোলন্ত ধনঞ্জয় তোম্হার কীর্তনে কৃপাময়
আতি অনুরাগে জগতে করে হরিষ
তোম্হার কীর্তন-অগনির শিখায়ে দগধ হুয়া আতি
রাক্ষস পিশাচ পলাই জায় দশো দিশ

১২৩. গীতা-নির্ণয়

৩৩০ ভগবন্ত-ভক্তি-যুক্ত পুরুষর আত্ম-বোধ
মাধবর প্রসাদে মিলয়
কৃষ্ণর কৃপাত জানা ঘুচয় সংসার-বন্ধ
এহিমানে গীতার নির্ণয়

---

१९. पद-पन्थ

१२४. सन्तर कृपात सुवासना

३३१ सुवासना दुर्वासना दुइ वन्धर मोक्षर मूल हेतु
गुना जेनमते उपजय पुरुषत
सन्तर कृपात सुवासना सुखे पुरुषक पावे जाना
होवे दुर्वासना सन्तर मन-कोपत

३३२ महन्तर वाक्य जिटो करे ताक सुवासना अनुसरे
सन्तर कृपात भजे गोविन्दर पावे
जिटो महन्तक निन्दा करे ताक दुर्वासना वेढि धरे
कृष्णक भजिवे नपारय मूढभावे

१२५. महन्त-लक्षण

३३३ कृष्ण-पद-मात्र सेवा करे समस्ते कामना परिहरे
वेद-व्यवहार कदाचितो नलङ्घय
कृष्ण-पद-सेवा-सुख मने करे अनुभव सर्वक्षणे
इहाक महन्त वुलिया जाना निश्चय

१२६. चर्मावृत-पादः

३३४ गुनियो मज्जन शास्त्र-सार सकले सम्पत्ति जाना तार
हरि-भक्ति-रसे सन्तोष मन जाहार
चर्मर निर्मित पानैजुडि चरण ढाकिले जिटोजने
जेन मवे भूमि चर्मावृत भैल तार

१२७. अन्तस्त्यागी बहिःसङ्गी

३३५ अन्तरत एक ईश्वरक देखियोक नाना बाहिरत
अन्तरत बोध बाहिरत जड-प्राय
बुद्धित समस्ते तेजियोक बाहिरत सङ्ग देखायोक
एहिभावे राम लोकत फुरा वेढाइ

१२८. विरक्तो मद्‌भक्तो वा

३३६ अविरक्त भकतर वेद लङ्‌घिवाक दोप
जानिवाहा इहाक निश्चय
परम विरक्त जिटो कृष्णर भकत भैल
तार एको नाहिके निर्णय

३३७ तावत कृष्णर भक्त नरे भक्ति-अविरोधी कर्म करे
कृष्णर कथात रति जावे नुपजय
जेवे भैल कृष्ण-कथा-रत नित्य नैमित्तिक आदि जत
कथार विरोधी जानिया सवे तेजय

१२९. हरिदास भैले

३३८ समस्ते तपके आचरोक परोक पर्वते उठि जत
तीर्थत भ्रमोक पढोक वेद-निचय
यजोक समस्ते यज्ञचय योगक जानोक समस्तय
हरि विने कदाचितो मृत्यु नतरय

३३९ महन्तसवर सङ्ग लैया हरित एकान्ते चित्त दिया
परम आनन्दे गावे हरि-गुण-नाम
सहजे दयालु देव हरि लैवा आपुनार दास करि
हरि-दास भैले हैवा भाइ पूर्णकाम

१३०. पञ्चग्रन्थो

३४० व्यास निगदति भव्यमति शुनियो आनन्दे कर्ण पाति
देओ उपदेश ऊर्द्ध्व वाहु उच करि
एहिमाने मात्र महामन्त्र ससार-दुर्घोर-विपहारी
नमो नारायण वुलियोक मुख भरि

३४१ सकले निगमे कल्पतरु तार फल महाभागवत
शुक-मुखे आसि भूमित भैला विदित
रसत चतुर जिटोजन कृष्णर चरणे दिया मन
परम सन्तोषे पियोक फल-अमृत

३४२ हरिक सतते स्मरा प्रजा समस्ते पुण्यर इसे राजा
हरिक स्मरणे सिजय पुण्य किङ्कर
नपासरिवाहा कदाचित शुना कथा इटो विपरीत
हरि पासरिले सिजे पाप निरन्तर

३४३ शुनियो पार्वति तुमि एवे राम राम राम वोला जेवे
तोमार वदन हैवेक श्रेष्ठ अमूल्य
राम राम राम राम वुलि रामते रसोहो सर्वक्षणे
जाना राम-नाम सहस्र नामर तुल्य

३४४ वेदागम आदि करि जत विस्तर शास्त्रत नाहि काज
विस्तर तीर्थत नाहि किछु प्रयोजन
ममार तरिते खोजा जेवे आपुन मोक्षर हेतु तेवे
गोविन्द गोविन्द ब्रेकते वोला वचन

१३१. भक्त-विहार

३४५ जाना श्रीराम नामे निज समस्ते मन्त्ररे मूल बीज
सञ्जीवनी-प्राय जार मने प्रवेशय
यदि हलाहल पान करे प्रलय-बह्नित यदि परे
मृत्युर मुखत प्रवेशिले नाहि भय

३४६ पूर्ण शशी पूर्ण दुग्ध-सिन्धु सिमत प्रकाश नकरय
कमनीय लक्ष्मी-वदनो सिमत नय
ईश्वर कृष्णर पाद-पद्म भजि, स्पृहाहीन भैला जिटो
सिटो मनगोटे जिमते शोभा करय

३४७ श्रीमुकुन्दर नाम-गुण-कीर्तन प्रकाशे जि दिशत
सि दिशक प्रति नमस्कार जिटो करे
चिदानन्द-घन स्वरूपत ईश्वर कृष्णत नित्यागत
परम आनन्द करे सिटो साधु नरे

३४८ हरि-भक्ति-राजमार्गे गुरु-पद-नखचन्द्र-प्रकाशित
श्रुति-जननीर पद-पन्थ अनुसरि
फुरो हुया आमि आनन्दित स्खलन नाहिके कदाचित
महाजनसव जानिवा निछय करि

---

२०. नीति

१३२. अविरोध-साधक सहस्रनाम

३४९ विष्णुर सहस्र-नाम सदा आछन्तो जिह्वाये ताक एडि
सदाय बिरोध-वचन मात्र रटय
बुद्धि विष्णु-तत्त्व परिहरि असन्त वस्तुत रति करि
जेन वेश्या जार-पतित मात्र रमय

१३३. स आत्महा

३५० समस्तरे आदि नर-तनु उद्यम कौटियो नपाय पुनु
कोनो भाग्योदये पाया नाव दृढ आति
गुरु भैला तात कर्णधार कृष्णे भैला अनुकूल वायु
तथापि ससार नतरय आत्मघाती

१३४. वेदवाह्य भक्ति आरु भक्तिबाह्य बेद

३५१ माधवे बोलन्त श्रुति स्मृति मोर आज्ञा-वाणी जाना निष्ठि
जिटोजने आके उलङ्घिया प्रवर्तय
भैल सिटो मोर आज्ञा-छेदी मोक द्वेप करिलेक आति
मोर भक्त हन्तो वैष्णव सिटो नोहय

३५२ जत उग्र तप ज्ञान गुण याग योग यज्ञ दान पुण्य
किवा प्रयोजन साधिवेक तासम्वार
कृष्ण जगतर आत्मा निज मोक्ष-सुख-प्रद देव ट्ट
ताहान चरणे भक्ति नाहिके जार

१३५. वृद्धदशा

३५३ वालके करोक वहुमान युवाये सेवोक पारेमान
वृद्धे विषयर वहिर्भूत हुया गैल
भोग करिवाक नपारय तथापितो आशा नछाडय
हरि हरि हरि किनो विपरीत भैल

१३६. सफाई विभाग

३५४ वैष्णव-निन्दक सूचकक बिष्ठा लुटा ग्राम्य शूकरक
बिधाताये दुइको स्रजिलन्त दायातरे
सूचके जानिवा निरन्तरे साधुसकलक शुद्धि करे
जिमते ग्रामक शूकरे शोधन करे

१३७. अकारण वैरी

३५५ मृग मीन महासाधु नरे मनर सन्तोषे तृण जले
हिसा-शून्य हुया थाकय जीवन धरि
तथापितो इटो त्रितयर कैवर्त पिशुन व्याधसवे
इटो जगतत तिनि अकारण वैरी

१३८. वैषम्यं न

३५६ समस्तरे आत्मा नारायण आत्मा-सुखे रति सर्वक्षण
एहि हेतु हरि समस्ते प्राणीते सम
ताङ्क जिटो भजे सुखे तरे नभजि ससारे मजि मरे
कृष्णक विषम वोलय कोन अधम

---

२१. निगमन

१३९. पियो पियो पियो

३५७ पियो पियो पियो अमिया-माधुरी
हरि-नाम राम राम
दूरते तेजिया थैयो आन जत
मन-काम राम राम

३५८ भाल उपाय पाइलो भाइ भाइ ए
राम-नाम निगम-रहस्य
एक-चित्त-मने भाव भाइ भाइ ए
जारे नाम तारे करा वश्य

१४०. अप्रयासे आरु परम जतने

३५९ हरित शरण लैया जिटोजन ए
हरिर चरित्र श्रवण कीर्तन करे
दुर्घोर आपार ससार-सागर ए
सिटो महाजने आति अप्रयासे तरे

३६० राम कृष्ण राम कृष्ण वोल भाइ ए
परम जतने तेजियो जत अन्याय
तोमाक मइ भाण्डो तुमि मोक भाण्डा ए
चैव्यय साक्षीक भाण्डिवा कोन उपाय

१४१. राम-नामखानि फुरियो गाया

३६१ राम कृष्ण हरि वुलियो मुखे
हरि-पदे मन मजायो सुखे
राम वुलि फुरा वाहु आछाडि
कपटर मोट पेल्लाइयो फाडि

३६२ राम-नामखानि फुरियो गाया
कि करिवे पारे हरिर माया
राम-नामखानि लैयोक डाटि
हेलाये मारियो यमेर घाटि

३६३ राम-कृष्ण-नाम जप सघने
हरिर चरण नेडिवा मने
राम कृष्ण हरि वुलियो झाण्टे
मिल्बे मरण हाटे कि वाटे

१४२ कि कार्ये मनुष्य भैल पामर

३६४ नकरे कीर्तन हरि-नामर
कि कार्ये मनुष्य भैल पामर
हरि-कीर्तनत नकरे रति
पशुतो अधम सिटो कुमति

३६५ नुफुरे सदा हरि-गुण गाया
जानिवा मुहिले हरिर माया
हरि-कीर्तनत नेदिले चित्त
सिटो भाग्य-शून्य भैल वञ्चित

१४३. विचारि देखियो

३६६ विचारि देखियो पामर मनाइ ए
इह-परलोके हरिमे सुहृद बन्धु। राम राम
भजिया रहस सुहृद मनाइ ए
हरि-गुण-नाम अपार आनन्द-सिन्धु। राम राम

३६७ निचिन्ति आछस केमने मनाइ ए
सुखेर सागर हरित नकरि रति। राम राम
आलास तेजियो भजियो मनाइ ए
भृत्य-भय-हारी हरिसे परम गति। राम राम

३६८ राम कृष्ण राम कृष्ण बोल रे पामर मन
भुलिया कमने पापी मर
जार माया-पाशे बन्दी हुयाछ पामर मन
तान दुइ चरणत धर रे पामर मन

३६९ गोविन्द बोल मनाइ
मुकुन्द बोल मनाइ
ब्रह्मा हरो जात शरण पशय
आनर कोन बराइ

१४४. कैतव तेजियो

३७० जावत कैतव नेडस मन
तावत नपाइबि हरि-चरण
कैतव तेजिया भजियो हरि
तेबेसे हरि लैब दास करि

३७१ कैतव सत्य जान भाग करि
भजियो हरिक कैतव एडि
हरित विनाइ सवे कैतव
भज हरि-पावे करि उत्सव

३७२ सर्व पुरुषार्थ कैतव जान
हरि मात्र सत्य वेद प्रमाण
हरिर आश्रय नेडियो भाइ
ऐकान्तिक सुख तेवेसे पाय

१४५. मुक्त-सम्मत

३७३ क्षणिक जीवन जानि मनाइ
तरियो सुखे हरि-गुण गाइ
निर्गुण हरिर गुणक गाया
परमानन्द पाइवा तेजि माया

३७४ हरि-गुण-नाम निगम-तत्त्व
मुकुतसवरो मुख्य-सम्मत
जानि हरि-पावे नेडियो आश
कहे मूढमति माधव दास

---

३. महिमा

२२. कीर्तन-श्रवणादि

१४६. सत्सङ्गे भवभङ्गः

३७५ यदि भव-भय-भङ्ग मने इच्छा कर भाइ
सदा साधु-सङ्ग करा सार
एक क्षणमाने मात्र केवल साधुर सङ्गे
होवे नाव भव तरिबार

१४७. कीर्तन-महानन्द

३७६ हरि-कीर्तनर महा-आनन्द-सुखक आशे
कतो कतो सब महाजने
मुकुति-सुखको तेजि महन्तजनर सङ्ग
खोजे आति कृष्णर चरणे

३७७ किन्तु इटो महाधर्म माधवर जन्म-कर्म
वेदे जार नजाने महिमा
हरि-नाम-कीर्तनत मिले मोक्ष आदि जत
कीर्तन-सुखर नाहि सीमा

३७८ मधुररो सुमधुर हरिर कीर्तन-रस
मङ्गलरो परम मङ्गल
एतेकेसे मुकुतिको तेजि हरि-गुण गाया
फुरे महा महन्तसकल

३७९ जिसब चतुर नरे माधवर नाम-गुण
कीर्तन करन्त सावधाने
देवरो देवता हरि ताहार हृदय एरि
जाइबाक नपारे आन धाने

१४८. अन्तर्नाद-श्रवण

३८० हरि-भक्ति-सरोवरे सन्तोष-अमृत-जले
कृष्ण-पाद-पद्म प्रकाशय
राम-नाम राजहंस छानिया आराव करे
शुनि आति कौतुक मिलय

१४९. विघ्नत्रय

३८१ समस्ते तीर्थत स्नान करिलेक सर्व यज्ञ
दीक्षित भैलेक सिटोजन
समस्ते दानर फल सिसिजने पाइले आति
जिटो करे हरिर कीर्तन
३८२ माधवे बोलन्त मोक कृष्ण कृष्ण कृष्ण बुलि
सदाय सुमरे जिटोजने
जल हन्ते जेन पद्म नरकरपरा ताङ्क
आपुनि उधारो रङ्ग मने
३८३ यद्यपि दुर्जन कलि हरिर भकति-पथ
करिलेक विरल-प्रचार
एकान्त शरणे जिटो श्रवण-कीर्तन करे
ओचरो नचापे कलि तार

१५०. त्रयोदशी

३८४ परम-पुरुष देव परम-कारण प्रभु
परम-ईश्वर भगवन्त
सदानन्द सदाशिव सत्य सनातन हरि
जय जय अचिन्त्य अनन्त

१५१. अष्टनाम

३८५ अच्युत केशव विष्णु हरि सत्य जनार्दन
हंस नारायण अष्ट नाम
परम मङ्गल-रूप जिटो अहर्निशे लवे
तार पूर्ण होवे मनकाम

१५२. माधव-नाम

३८६ माधव माधव नाम वचनत सुमरय
माधव माधव हृदयत
निरन्तरे साधुसवे माधव माधव नाम
उच्चारय समस्ते कार्यत

३८७ परम मङ्गल-रूप माधव माधव नाम
जिटो महाजने उच्चारय
तार अमङ्गल-रूप गुचय ससार-भय
माधवर निकट पावय

३८८ दु स्वप्न-नाशन इटो माधव माधव नाम
दुष्ट-ग्रह-भय-विमोचन
परम सम्पद-रूप जानि माधवर नाम
सर्वदाये करियो कीर्तन

३८९ परम चतुर मिसि वुद्धित कुशल आति
जिटो माधवर गुण गावे
मिछा कलेवरगोटे मुकुति-वाणिज करि
भव तरि माधवक पावे

३९० जिजने एकान्त चित्ते माधवक भजि निते
फुरे माधवर गुण गाइ
दुर्लभ अमृत जेन सिजने करिले पान
मधुर पिवाक आर नाइ

३९१ भज भाइ माधवक स्मर भाइ माधवक
गाव भाइ माधवर गुण
निचिन्ति आपुन मार नखे आपुनाक तार
हृयो भाइ परम निपुण

२३. निश्चय

१५३. आराध्य-निश्चय

३९२ ईश्वर कृष्णसे निष्ट परम आराध्य देव
मोर तान नामे निज गति
हेनय निश्चय जिटो करिले कलित आति
सिसिजन परम सुकृति

१५४. निर्मत्सरता

३९३ भगवन्त ईश्वरर गुण-समूहक जिटो
शुनिते उद्यम करे नर
तेखणरेपरा सिटो जानिवा निश्चय करि
भैल आति शुद्ध निर्मत्सर

१५५. चाण्डालोऽपि यज्ञाय

३९४ ससारर इन्द्र कृष्ण ताहान नामक जिटो
अज्ञानते चाण्डाले लवय
हेनय पवित्र सिटो जानिवा यज्ञत आनि
पात्र पातिबार योग्य हय

१५६. नामतीर्थ

३९५ राम राम राम वाणी परम मङ्गल-रूप
जार मुखे प्रकाश करय
चिरकाले महातीर्थ करिया पवित्र हुया
ताको कदाचितो तुल्य नय

१५७. अन्तिम लक्ष्य

३९६ जगत-आश्रय कृष्ण ताहान अव्यय स्थान
ताक प्रति जेवे आछे मन
भगवन्त ईश्वरर चरण-पङ्कजे सदा
हुयो तेवे एकान्त-शरण

१५८. समस्ते प्राणीर अधिकार

३९७ परम निर्मल धर्म हरि-नाम-कीर्तनत
समस्ते प्राणीर अधिकार
एतेकेसे हरि-नाम समस्ते धर्मर राजा
एहि सार शास्त्रर विचार

३९८ वर्णाश्रम-धर्म जत जार जेन विहि आछे
तारेसे केवले अधिकार
हरि-नाम-कीर्तनत नाहिके नियम एको
एतेकेसे धर्म माझे सार

३९९ वेदर विहित जत आछे धर्म संसारत
सवे हरि-नामर किङ्कर
हेन जानि जिटोजने नामर कीर्तन करे
सेहिसे परम साधु नर

---

२४. रत्नत्रय

१५९. गुणग्रहण

४०० अधमे केवले दोप लवय, मध्यमे गुण-
दोप लवे करिया विचार
उत्तमे केवले गुण लवय, उत्तमोत्तमे
अल्प गुण करय विस्तार

१६०. पुरुषार्थ

४०१ अविद्या-जनित सुख सत्य लोक आदि करि
आत निरपेक्ष निरन्तर
केवले चिदाङ्ग-शुद्धि-करणेसे मात्र जाना
पुरुपार्थ मुमुक्षुजनर

४०२ विद्या-अविद्या-जन्य-सुखे निरपेक्ष हुया
करिले आपुन मन थिर
सकले जगत इटो वासुदेवमय मात्र
पुरुपार्थ जानिवा ज्ञानीर

४०३ समस्ते सुखके तेजि पुरुपोत्तमर प्रेम
भकतिक करिल आश्रय
भकतसवर एहि पुरुपार्थ मनोनीत
आनो सुख अधिक पावय

१६१. विधि-मुक्ति

४०४ मुमुक्षुजनर जेवे अविद्या-जनित सुखे
विरकति भैल आतिशय
केवले आत्मात मात्र सदाये रमण करे
तेवे विधि-किङ्कर गुचय

४०५ ज्ञान-निष्ठजने विद्या-अविद्या-जनित दुयो
सुखे विरकति भैल जेवे
वासुदेवमय मात्र देखय जगत इटो
विधिर किङ्कर गुचे तेवे

४०६ पुरुषोत्तमर प्रेम-भकति-सुखक मात्र
निश्चय करिला जिटोजन
शरण-कालरेपरा विधिर किङ्कर गुचि
करे सदा श्रवण-कीर्तन

१६२. भारत-रत्न

४०७ भारत रत्नर द्वीप मनुष्य-शरीर नौका
राम-नाम महारत्न सार
हेनय वाणिज पाइ जिटो जीवे नकरिल
तात परे दुखी नाहि आर

१६३. रत्न-प्रकाश

४०८ परम अमूल्य रत्न हरिर नामर पेडा
आति गुप्त-स्वरूपे आछिल
लोकक कृपाये हरि शङ्कर-स्वरूपे आनि
मुद भाङ्गि समस्तके दिल

---

२५. प्रभाव

१६४. वह्नि-वायु-संयोग

४०९ श्रीराम-नाम मल-अरण्यर
वाडव अगनि सम
श्रीराम-नाम मनर उत्सव
भद्रतो भद्र उत्तम

४१० राम शवदर 'रा' पद भैल
प्रचण्ड वह्नि-निश्चय
'म' वायु समे अवर्म-अरण्य
दहिया भस्म करय

४११ कुकथा पापण्ड सवाद विवाद
पर्वत आति निठुर
रामकृष्ण-नाम-वज्रक प्रहारि
करा ताक मपिमुर

४१२ सुदृढ विश्वास करि जिटोजने
सदा राम-नाम गावे
ताक वाप-दाय दिया दुप्ट कलि
दूरतो दूर पलावे

४१३ अलप अक्षर राम-कृष्ण-नाम
कोमलरो सुकोमल
राम-कृष्ण-नाम सवारो सुहृद
मङ्गलरो सुमङ्गल

১৬৫. হরেরণ্যগম্যঃ

৪১৪ মুকুতসবরো মনক টানিয়া
আনয় হরির গুণে
এক-প্রাণ হুয়া মহন্তসকলে
গাবয় কহয় শুনে

৪১৫ হরির নামর অনন্ত মহিমা
জানি মহাজনে গান্ত
আপুন নামর মহিমাক হরি
আপুনি অন্ত নপান্ত

৪১৬ হরির নামর অনন্ত প্রভাব
কোনে কহি পাবে সীমা
সসার বিনাশে হরিকো প্রকাশে
নামর মহামহিমা

৪১৭ হরির নামত একোবে বিঘিনি
নাহিকে জানা নিশ্চয়
আন জত ধর্ম তাহারো বিঘিনি
নামেসে দূর করয়

১৬৬. ধর্মোবত ধর্ম

৪১৮ ধর্মে পৃথিবীর আগত কহিলা
মহাভাগবত-ধর্ম
মুকুতি-সুখর কেবলে আশ্রয়
জানা মাধবর কর্ম

৪১৯ অন্যত্র সাধনে কোনো বিচক্ষণ-
জনক মোক্ষ দিবয়
কৃষ্ণর জন্মর কর্মর কীর্তনে
মুকুতিকো বিস্ময়

१६७. रुद्रादि-सङ्कर्षण

४२० राम हेनो इटो दुगुटि अक्षर
वलर नाहिके सीमा
मुकुति-सुखको करिले अधीन
आछोक आन महिमा

४२१ जिटो रुद्रदेवे परम लीलाये
जगतके सहरन्त
रामर नामर तेहो हुया वश्य
दिने-रात्रि सुमरन्त

४२२ नारद सनत-कुमार अनन्त
शुकमुनि आदि करि
मुकुति-सुखक ठेलि राम-नाम
सदाय फुरे सुमरि

४२३ इटो राम-नामे आपुनार गुणे
ईश्वरको करे वश्य
एतेके जानिवा राम-नाम विने
शास्त्ररो नाहि रहस्य

४२४ भालुक वानर राक्षस तरिल
रामत करिया सेव
हेनय परम कृपालु देवता
राम विने नाहि केव

१६८. धेनु-वत्स-न्याय

४२५ माधवर नाम वत्स-प्राय भैल
भक्ते ताङ्क लैया जान्त
वेदर ईश्वर हरि धेनु जेन
तार पाछे पाछे धान्त

---

२६. प्रेरणा

१६९. कलि-भाग्य

४२६ तारासवे पूज्य तारासवे धन्य
तारासे सुहृद जन
कलि-युगे हरि आनको बोलावे
आपुनो करे कीर्तन

४२७ धन्य कलि-युग धन्य राम-नाम
धन्य धन्य नर-काया
भाग्यहीन जनो जपि राम-नाम
तरय दुस्तर माया

४२८ सत्यादिर लोके कल्ति जनम
वान्छा करे निरन्तर
हरि-गुण गाया निश्चये कलित
हैव नारायण-पर

४२९ मुकुन्त कोटिर माजत दुर्ल्भ
जाना नारायण-पर
कलि-युगे हेन नारायण-पर
हैवे लोव निरन्तर

१७०. नित्य-सन्ध्या

४३० चैतन्य-ईश्वर-आदित्य जाहार
हियात भैला प्रकाश
काल-मेघ-प्राय अविद्या-आन्धार
ताहारो होवे विनाश

४३१ चैतन्य-आदित्य हृदय-आकाशे
सर्वदाये प्रकाशय
उदयास्त नाहि सन्ध्या-उपासना
करिवो कोन समय

४३२ जिहेतु गोविन्द निज-यश-प्रिय
भकत-वत्सल हरि
सिहेतु सदाय नाम-गुण शुनि
थाकन्त आनन्द करि

१७१. गाम्भीर्य-ध्यान

४३३ गमन गम्भीर वचन गम्भीर
गम्भीर नाभि-कमल
एहि त्रिगम्भीर स्मरणे कृष्णर
मिलय महामङ्गल

१७२. युग-धर्म

४३४ मिनति वचन बोलो सर्वजने
शुनियो शास्त्रर मर्म
आपुन कुशल चावा जेवे तेवे
नेरिबाहा युग-धर्म

४३५ सत्य-युगे ध्यान त्रेता-युगे यज्ञ
द्वापर-युगत पूजा
कलित हरिर कीर्तन विनाइ
आवर नाहिके दुजा

४३६ कलित हरिर कीर्तन एरिया
अन्यत्र धर्म आचरे
मिछात केवल श्रम मात्र पावे
एकोवे फल नधरे

४३७ संसार तरिते इच्छा आछे जार
करियो हरि-कीर्तन
परम निर्मल गति पाइबा जुने
छिण्डिबा कर्म-बन्धन

१७३. जय जय शङ्कर

४३८ वैकुण्ठ प्रकाशे हरि-नाम-रसे
प्रेम-अमृतर नदी
श्रीमन्त शङ्करे पार भाङ्गि दिला
वहे ब्रह्माण्डक भेदि

४३९ गोविन्दर प्रेम अमृतर नदी
वहे वैकुण्ठरपरा
चारि पुरुपार्थ ताहार निझरा
हरि-नामे मूल धारा

४४० हरि-भक्ति-दान दिया जगतके
तारिला ससार-सिन्धु
हेनय कृपालु शङ्कर विनाइ
नाहि नाहि आन वन्धु

४४१ हरि-भकतिर पातिलन्त हाट
शङ्करे जगत जुरि
राम-नाम-रत्न वेहाया जगते
चलय वैकुण्ठ पुरी

४४२ श्रीमन्त शङ्कर हरि-भकतर
जाना जेन कल्पतरु
ताहान्त विनाय नाहि नाहि नाहि
आमार परम गुरु

---

२७. योग-सार

१७४. राम बुलि तरे मिरि आसम कछारी

४४३ अनन्त नारद शुक सनतकुमार
तारा गावे हरि-यश जानि योग-सार
हरि-नाम-कीर्तनर शवद तुमुल
आनन्दर भरे होवे भकत आकुल

४४४ राम-कृष्ण-नामर देखियो केन बल
अधमको करे नामे परम निर्मल
हरि-नामे नाहिके नियम अधिकारी
राम बुलि तरे मिरि आसम कछारी

१७५. जेइ नाम सेइ हरि

४४५ हरि-नामे जत पाप सहरिते पारे
ततेक पातकी पाप करिते नपारे
आपुन नामर सङ्ग नछाडन्त हरि
जेइ नाम सेइ हरि जाना निष्ट करि

४४६ हरि-चरणत प्रेम मिलिल जाहार
आन कोन सम्पत्ति हरिओ भैल तार
जार मुखे राम-वाणी आसे सरसरि
जानिवा निश्चय तात वश्य भैल हरि

४४७ हरि जार वश्य भैल तार किवा रैल
हरिर कृपार पात्र सिसिजन भैल
रामकृष्ण-नामर कल्लोल-रोल शुनि
वेङ्गामुवा यम-दूत पलावे आपुनि

---

२८. नामायन

१७६. 'रा-म' कपाट

४४८ 'रा' शवदक उच्चरन्ते राम राम राम राम राम
मुख हन्ते वाज हुया पलाय पापमाने
पुण्यमाने होवे अभ्यन्तर राम राम राम राम राम
'म' बुलि आति कपाट मारय टाने

१७७. रामत करिया रामनाम चार

४४९ अनन्त-शकति तुमि राम लक्ष्मण सुग्रीव विभीषण
हनुमन्त आदि महा महा वीरगणे
आनि तरु लता पर्वतक कतेक योजन समुद्रक
सेतु वान्धि पार भैलाहा महा जतने

४५० हे प्राण-प्रभु रघुपति राम राम राम राम राम
तोमात करिया तजु गुण-नाम चार
विना सेतु-वन्ध करि नरे राम राम राम राम राम
अपार संसार-समुद्रर होवे पार

१७८. कृष्णवित् कृष्ण एव भवति

४५१ कृष्ण प्रियतम आत्मा निज राम राम राम राम राम
जात हन्ते अणुमात्रको भय नुगुनि
आक जिटो जाने सेहिजन राम राम राम राम राम
विद्यावन्त गुरु सेहिमे हरि आपुनि

१७९. कृ-कृपा, ष्ण-लज्जा

४५२ कृष्ण कृष्ण कृष्ण बुलि जिटो अन्तकाले निज प्राण तेजे
आद्यर शबदे मुकुति ताङ्क दिवय
आर आक किवा दिवो बुलि आउर दुइ पदे लज्जा हुया
ऋणी भैलो बुलि नमाइया माथा थाकय

१८०. पादमूले=पुरुषार्थशिरसी

४५३ हे कृष्ण तजु पद-मूले एकान्त शरण लवे जिटो
कोन लाभ इटो एडाइवा कालर भय
तजु भकतर सङ्गगोटे सर्व पुरुपार्थ-राशि शिरे
चडिया कौतुके अत्यन्त नृत्य करय

१८१. अवतारहेतु

४५४ परम दुर्बोध आत्म-तत्त्व तार ज्ञान-अर्थे हरि जत
लीला-अवतार धरा तुमि कृपामय
ताहान चरित्र-सुधा-सिन्धु ताते क्रीडा करि दीन-बन्धु
चारि पुरुषार्थ तृणर सम करय

१८२. उरुक्रम-पराक्रम

४५५ उरुक्रम-पद-रेणु सेवि छय उर्मि जिनिलेक जिटो
सिटो पुरुपर जानिवा आश्चर्य नाइ
आवेसे आश्चर्य वुलि धरि जार नाम एकवार स्मरि
चाण्डालो सम्प्रति संसार-बन्ध एडाय

१८३. भक्ति-सरोबरे

४५६ भक्ति-सरोवरे कृष्ण-पद-पङ्कजत पडि निरन्तरे
परम आनन्दे भकत-भ्रमरा-जाके
कृष्ण-यश-रस-मधु-पाने मत्त हुया आति सावधाने
राम-नाम-राजहस-राव शुनि थाके

१८४. कथने-मथने

४५७ ऐकान्तिक महामुनि जत निर्वातिया विधि-निपेधत
निर्गुण भावत थिति हुया निरन्तरे
जानि पुरुपार्थ सार-तत्त्व कृष्ण-कथामृत-सागरत
कथने-मथने सदाये रमण करे

४५८ हरिर गुणर देखा वल लभिलेक जिटो मोक्ष-फल
ताहारासवारो चित्तक आनय टानि
एतेके निपुण जिटोजन कृष्णर चरणे दिया मन
हरिर गुणक नछाडिवा सार जानि

१८५. शुकानुभव

४५९ शुक निगदति परीक्षित यदि आमि निर्गुणत थित
तथापि उत्तम-श्लोकर महिमा-गुणे
करिलेक मोक वश्य चित भागवत-ग्रन्थ विपरीत
परम आनन्दे पढिलो आमि आपुने

१८६. तिनिरो उत्तम भक्ति

४६० सृष्टि-स्थिति-प्रलयर हेतु अनन्त विचित्र कर्म हरि
करा जिटो ताक गावे शुने प्रशसय
अपवर्ग-दाता भगवन्त ताहान चरण-पङ्कजत
तिनिरो निष्ठय उत्तम भक्ति होवय

---

२९. प्राप्ति

१८७. नाम-प्रताप

४६१ हरि-कीर्तनर ताप लागि पलाय पाप दशो दिशे भागि
हेरा पाइले बुलि भयत भिडि लवडे
ब्रह्माण्ड भितरे नपाइ ठाइ आउर ब्रह्माण्डक पलाइ जाय
नामे खेदि नेन्ते ब्रह्माण्डोपरि बागरे

४६२ पाछे पाछे हरि-नामे खेदे एको ब्रह्माण्डत थान नेदे
महा महा पातेकर गर्व भैल दूर
एवे कैक जाइबो बुलि डरि काम्पे सबे पाप तरतरि
हरि-नामे पाइ दहि करिलेक चूर

४६३ नामे पुरुषक शुद्ध करि रैल नाम ताते भरि-पूरि
धर्ममय तनु भै गैल हरि-भकत
हरिर करुणा भैला ताक उच्च करि दिया हरि डाक
परम सन्तोषे नाचे आति आनन्दत

१८८ तारिते शीघ्रे नपारे

४६४ शुद्धे वा अशुद्धे एक नाम बोले वा शुने वा मने स्मरे
अपराध-हीन पुरुषक सद्ये तारे
देह धन जन अर्थ लोभे पापगइ बुद्धिये जिटो रवे
नेहि हरि नामे तारिते शीघ्रे नपारे

१८९. दिग्देश-प्रशंसा

४६५ जिदिशत महाभक्तसवे श्रीमन्त कमललोचनर
परम सन्तोषे कीर्तन जिटो करय
सिदिशक नमस्कार करि दुर्घोर ससार सुखे तरि
आपुनि अच्युत-स्वरूप सिटो होवय

४६६ रमानन्द-पद-युगलर मकरन्द-मधु-व्रत-प्राय
भकतसकले जिदिशत प्रकाशय
सिदिश जानिवा गङ्गादेवी अनेक प्रवाह रूपे सेवि
परम निर्मल स्वरूपे शोभा करय

४६७ श्रीमधुद्विप ईश्वरर कीर्तन मङ्गल निरन्तर
जिटो भूमि-भागे शुद्ध रूपे होवे जात
तार धूलि जिटो शिरे धरे निछये जानिवा सिटो नरे
कृष्णर परम वल्लभ होवे साक्षात

१९०. साधन-सोपान

४६८ हे देव महेश्वर हरि तजु कथामृत पान करि
वढाया भकति मनक शुद्ध करय
वैराग्येसे सार भैला जार हेनय बोधक लभि पुनु
परम निर्मल वैकुण्ठ गैया पावय

१९१. एकान्त-भक्त

४६९ एकान्त भकत जारा हय किछु अर्थ तारा नवाञ्छय
महा अदभुत हरि-गुण-नाममय
परम मङ्गल कृष्ण-यश जात परे आन नाहि रस
परम आनन्द-समुद्रे मजि रहय

१९२. आदिसत्ययुगीन धर्म

४७० आदि-सत्ययुगे शुद्ध धर्म आछिलेक मात्र हरि-नाम
देवसवे गुप्त करिले करि कपट
हेन हरि-नाम व्यक्त करि समस्ते लोकक उद्धारिला
श्रीमन्त शङ्करे भाङ्गिला सवारो पट

१९३. गुरु-गौरव

४७१ जिटो महामति गुरुजने हरि-भक्ति-पन्थ-उपदेश
दिया, दुखमय ससारर पार करे
हेनय परम-गुरु-ऋण शुजिवाक प्रति जाना निष्ट
अन्यत्र उपाय नाहि अञ्जलित परे

४७२ हरि जेन आति कृपामय भक्त गुरुजनो सेहि नय
दुयोजन एक शरीरत मात्र भिन्न
कृपा-रसे तुष्ट हुया चित्त लोकर हितक चिन्ति नित
निज गुणे तुष्ट दुयो अहङ्कारे हीन

---

३०. पूर्णाहुति

१९४. अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायक

४७३ गोविन्द गोविन्द गोविन्द गोविन्द
गोविन्द राम मुरारि
अनन्त कोटि ब्रह्माण्डर हरि अधिकारी

४७४ गोविन्द राम मुरारि मुकुन्द राम मुरारि
भकति-रोचन दुख-विमोचन
भकतर भयहारी

४७५ परम पुरुष परम आनन्द
परम गुरु मुरारि
अनादि अनन्त अच्युत गोविन्द
भकतर भयहारी

१९५. प्रकीर्ण घोषा

४७६ मोरे इष्ट देव यादवराय
सेवा करिबार नामे उपाय

४७७ सहजानन्द हरि स्वरूपानन्द
हृदयानन्द हरि परमानन्द

४७८ राम कमलापति तुमि अगतिर गति
भकति मिनति तुति नजानो पामर-मति

४७९ शिव शिव शिव शिव शिव
शिव सनातन जगजीव

४८० जगतजीवन राम जगतजीवन राम
जगतर सुमङ्गल तुवा गुण-नाम

१९६. मधुर-मूर्ति

४८१ मुरारि मुकुन्द राम मुरारि मुकुन्द राम
मुरारि मुकुन्द जय राम
सुमरणे पाप-क्षय मिले महामहोदय
दुखचय गुचे शोक भय हरि राम

४८२ राम कृष्ण गोविन्द राम कृष्ण गोविन्द
राम कृष्ण गोविन्द हरि
वनमाली वासुदेव पद्मनाभ जनार्दन
माधव मुकुन्द मुरारि हरि राम

४८३ माधव मधुर-मूरति मधु-सूदन
दनुज-दमन दुखहारी
पीताम्बरधर श्याम-सुन्दर हरि
जय जय मुकुन्द मुरारि हरि राम

१९७. नाम-महिम्न

४८४ राम कृष्ण राम कृष्ण राम। हरि हरि
रामते रमोहो अविराम। राम राम
राम-नाम धर्म अनुपाम। हरि हरि
पूरे भकतर मन-काम। राम राम

४८५ कलि-युगे राम-नाम सार। हरि हरि
राम-नाम विने नाहि आर। राम राम
राम वुलि पावे भव-पार। हरि हरि
राम-नाम जगत-उद्धार। राम राम

४८६ राम-नाम अमूल्य रतन। हरि हरि
राम-नाम विने नाहि धन। राम राम
राम-नाम मुक्ति-विडम्वन। हरि हरि
जप राम-नाम अनुक्षण। राम राम

४८७ राम-नामे भकति सुगम। हरि हरि
नाहि भक्ति राम-नाम सम। राम राम
राम-नाम धर्मते उत्तम। हरि हरि
राम-नाम पातकर यम। राम राम

४८८ राम-नामे धर्म-शिरोमणि। हरि हरि
राम-नाम पापर अगनि। राम राम
राम-नाम मृत्यु-सञ्जीवनी। हरि हरि
राम-नाम वृपियोक छानि। राम राम

१९८. नाम-निष्पत्ति

४८९ राम कृष्ण जिटो सतते सुमरे
तार आर काक भय
समस्ते धर्मर उपरे वसिया
राम-नाम प्रकाशय

४९० राम-कृष्ण-नाम-कीर्तन विनाइ
कृत्य-शेष नथाकय
राम-कृष्ण-नाम-कीर्तने कृष्णर
कृपार मन्दिर हय

४९१ राम-कृष्ण-नाम-कीर्तन-प्रभावे
संसार सुखे तरय
राम-कृष्ण-नाम-कीर्तने समस्ते
विघिनि नाश करय

४९२ राम-कृष्ण-नाम-रसक लभिया
मुकुतिको नगणय
राम-कृष्ण-नाम परम-आनन्द-
समुद्र मजि थाकय

१९९. नाम-विजय

४९४ हियार माजे नामर भाण्डार
मुखे वाज हय
राम-नामे मारणा मारे
पाप-कटकर क्षय

४९५ पाप-विपक्षक सहरि हरिर
नामे खलखलि हासे
सकल धर्मर उपरे वसिया
हरिर नाम प्रकाशे

४९६ मुकुति-सुखक वश्य करि हरि-
नामे आनन्दत नाचे
पुरुषे सहिते सखित करिया
चलय हरिर काछे

४९७ आपुन नामर महिमा देखिया
हरिर आनन्द चडे
जिटो नाम लय हरि तार हय
इ पुनु रहस्य वरे

४९८ हरि-गुण-नाम भाविया पुरुषे
रहय हरिर पाशे
हरिर चरण हृदये धरिया
कहय माधव दासे

२००. जानिया भजियो भाइ

४९९ ए भावक भाइ भज भगवन्त भक्तिभावे
भगवन्त भजिया परम गति पावे
भगवन्त नभजि चलय यम-ठावे
भगवन्त-भकतक शमने नधावे

५०० भगवन्त भजिया जनम वाहुडावे
आन जत सवे मिछा भक्तिर अभावे
जानिया भजियो भाइ भगवन्त-पावे
एहु रस माधव मूरुखमति गावे

॥ श्रीकृष्णाय नम ॥

असमिया उच्चारण सम्बन्धी सूचनाएँ

१ 'च' और 'छ का उच्चार 'स' के समान होता है।

२ 'ग' और 'स' का उच्चार 'ह' के समान होता है।

३ 'प' का उच्चार 'ह्' मिश्रित 'ख' के समान होता है।

४ सयुक्ताक्षरो मे 'ग् प् स्' और 'च् छ्' का उच्चार 'ग् ष् स्' और 'च् छ्' ही होता है।

५ 'क्ष' का उच्चार 'स्य' या 'क्ख' के समान होता है।

६ 'अै' का उच्चार 'ओइ' के समान होता है।

७ 'औ' का उच्चार 'ओउ' के समान होता है।

८ शब्दारभ मे 'य' का उच्चार 'ज' के समान होता है।

नामघोषा-सार के कठिन शब्दों का अर्थ

[अङ्क घोषाओं के हैं]

अजनीया = प्रकाश दिखानेवाला	२४३
असन्त = असत्य	२३३
आउर = अन्य	४६१
आकल = पकड़	२७१
आके = इसको	२०
आचान्त = आचमन	३५
आछस = हो	३६७
आछा = हैं	६
आछाड (र) = ठोकना (वाहु आछाडि = वाहु ठोककर अर्थात् निर्भय होकर)	३६१
आछे = है	१८
आछोक = रहने दो	४२०
आत = इसमें	३१९
आन = अन्य	११
आपुन-हुरे = अपने-आप	२८३
आयाजान = आना-जाना	१६२
आर = और	११
आर = इसका	१८३
आराव = ध्वनि	३८०
आलास = आलस	२३०
आवर = और, अन्य	२४
आवे = अब	१२९
आसि = आकर	१३४
आमे = है	८४
इ = यह	४९७
इटो = इस, यह	२७
इवार = इस वार	५८
इवेलि = इस वार	१६१
इसव = ये सब	४८
इसे = यह	३४२
इहात = इसमें	२६०
उधार = उद्धार करना	३८२
उपग = तैरना	३६
एकाजानि = एक साथ, एकत्रित	२८८
एकान्त = अनन्य	१२७
एकेखानि = एकमात्र	३०५
एकोवे = कुछ भी	८३६
एत = इतने	११०
एतावन्त = ऐसे	१८१
एतिक्षणे = इस क्षण, अभी	२१०

एतेके=इसलिए २२
एर=छोड़ना ७
एवे=अब १३
एहि=इन ७९
एहि=यह २३४
एहिमान=इतना ६७
एहु=यह ५००
ऐकान्तिक=निष्ठावान् ४५७
ऐत=यहाँ १८५
ओवर=नजदीक ३८३
कत=कितना १०३
कतनो=कितना ७७
कतवा=कितनी बार १६१
कतो=कितने ३७६
कतोहो=कितना भी ३६
कपाट=द्वार ४४८
कसन=कैसे ३७
कसने=कैसे ८७
काकूति=प्रार्थना १२१
काको=किसीका २३०
काछ=साथ, संग ४९६
काण=कान २८३
कातर=व्याकुल ११९
कि=क्या १४९
किछु=कोई २४४
किन्=खरीदना ८५
किनो=कीनना ७६
किनो=कितना १४९
किवातरे=किस कारण, किसलिए ८३
किमते=कैसे ११२
किसक=किसलिए ५१
केनमते=किस तरह १८१
केने=क्यों ७६
केमने=कैसा २७७
केव=किसीने, कोई भी ४६
कँक=कहाँ ४६२
कँलो=कहा ६४
कोन=कौन १८
कोनतो=कौन ? २४१
कोवा=पक्षीविशेष की आवाज २२०
खलखलि=उच्च शब्द करके ४९५
खाण्डा=तलवार, खड्ग २८४
खानि (खन)=अर्थशून्य उपशब्द ३६२
खुज=माँगना २२३
खेद=खदेड़ देना ४६१
खोज=इच्छा करना ३४४
ग=जाना ४६
गाइ=गाय २२७
गियान=ज्ञान ८४
गुच=जाना, दूर होना, हटाना ९५
गोट=समुदाय ४५३
गोवाइलो=गँवाया ७४

गोहारि = निवेदन १९
घुमटि = नींद ९७
चड = चढ़ना ४५३
चा = देखना ९
चा = चाहना ३९
चाप = (नजदीक) आना ५९
चार = श्रेष्ठ ४५०
चूर = चूर्ण १४२
चैध्य = चौदह ३६०
छाड = छोड़ना १०५
छानिया = छाकर ३८०
छाद = बाँधना २५७
छिड् = तोड़ना १६
जत = जितना २
जतेक = जितना भी २४
जयात = जहाँ १८०
जर = ज्वर ७२
जरी = रस्सी २५७
जा = जाना ३६
जाइ = रहना (पूरक अव्यय) ९७
जाक = अनेक वचन निर्दशक अव्यय ३७
जाक = समूह (Flock) ४५६
जात = जिसमें, जहाँ ११
जात = जिससे १९३
जात = घोषित ४६७
जानस = जानते हो २८
जार = जिसके २
जारा = जो (अत्यन्त आदरार्थी) ४६९
जावे = जब तक २३०
जाहार = जिसके ९२
जाहार = जिस पर २०९
जि = जिस ४८
जिकालत = जिस समय ७
जिटो = जो १
जिन् = जीतना २८७
जिमते = जिस तरह ४
जिहेतु = जिस कारण ७८
जुरि (जगत) = दुनियाभर ४८१
जुवाइ = योग्य, उचित १९
जेइ = जो ४८५
जेन = जैसा १९
जेन = जैसे २१
जेनमते = जिस तरह १२८
जेवे = जब १०९
जेहेन = जैसे १९०
जोनो = शायद १२६
झाण्टे = शीघ्र ३६३
टाने = जोर से, पक्का ४४८
ठाइ = स्थान ११८
डाउक = पक्षीविशेष (बगल के जैसा एक पक्षी) २२०
डाक = बुलाना ५६

डाटि=दृढ़ता से २८४
तजु=तुम्हारा १३
ततेक=उतने ४४५
तयात=वहाँ १८०
तरतरावे=थरथराना १६५
तरे=देखिये किवातरे ८३
ताक=उन्हें २०६
ताके=उन्हें ६
ताक=उनके १११
तान=उनका १०६
तान्त=उनके ८९
तारा=वे (अत्यन्त आदरार्थी) ४६९
तारासवे=वे सब २५५
तावे=तब तक २३०
तासम्बार=उनके ९३
ताहाक=उनके २०१
ताहाते=उनमें २५१
ताहान=उनका ३२
तिन्ति (तित)=भीगकर ५५
तुल=उठाना ४
तेखणरेपरा=उसी क्षण से ३९३
तेखने=उसी क्षण २६२
तेनय=वैसे ७१
तेन्ने=फिर ९३
तेवे=तब ४०५
तोद=तुझे ३०
त्रितयर=तीनों के ३५५
थाकतेओ=रहते हुए भी १८२
थान=स्थान ४६२
थाप=रखना १८
थैयो=रखिये १६
दान्त=दाँत ४
दाय=दोष २७०
दायक=उत्पीडन को २४१
दायातरे=दयापूर्वक ३५४
दुइ=दो ८
दुगुटि=दो (गुटि=उपशब्द) १६६
देवान=दूकान २९५
देहा=देह १०१
धान्त=दौडता है ४२५
धिक=धिक्कार ३००
नपार=न सकना ५२
नफर-दाय=भक्त की शपथ १३५
नय=नहीं १२३
नय=नीति २०५
नानान=बहुत २५९
निकार=कष्ट, दु:ख १५२
निचय=निश्चय १२०
निझरा=निर्झर, झरना ४३९
निविहिला=नष्ट किया १०२
निमज=निमग्न होना ३४
निपलज=निर्लज्ज २२४
निष्ट=निश्चय ३४
निष्ठी=निश्चित ३५१

नेदाहा=देते नही	७७	वहुतर=वहुत	१०२
नेन्ते=ले जाते हुए	४६१	वागर=लौटना	४६१
नोजोडय=काफी नही	३०	वाघजालि करि=(चारो ओर से) घेरकर	२३८
नोवोलस=वोलता नही	२७		
पट=आवरण	४७०	वाछि=चुनकर	१४५
पदे=इसलिए	१५८	वाज=प्रकट	१०१
पर=पडना	३४५	बाजी=वन्ध्या	२७५
परियार=परिवार	२१५	बाझू (पलाइवेक)=दूर भागेगी	२८३
परे=श्रेष्ठ	१९३		
पश्=प्रवेश करना, लेना	११	वापदाय=धर्मपिता	४१२
पाछे=पीछे	९९	वाय=वजाना	३१६
पात=खोलना	२९५	बाहुड=धन्य होना	५००
पानैजुडि=पादत्राण, जूता	३३४	बिका=विक जाना	११९
पारेमान=यावच्छक्य (जितना संभव हो)	३५३	बिचार=सोचना	२७७
		बिनाइ, बिनाय=विना	४४०
पाश=वद्ध	२९५	बिने=बिना	५
पासर=भूलना	३४२	बिहि=विहित	३९८
पुनु=फिर से	३५०	बुर=डूबना	८४
पुप्=पालना-पोसना	२२४	वेकत=स्पष्ट	१४
पूर=पूरा करना	६१	बेंकामुवा=टेढा मुँह	४८७
पेह्लाइयो=फेंकिये	३६१	बेढाइ=चारो तरफ बढते चलो	३३५
फुर=घूमना	१२९		
वटे=प्रताप से	१९७	बेहा=व्यापार	४४१
वयस=आयुष्य	७४	भरि=पैर	१८३
वर=श्रेष्ठ	२३८	भाग=फोडना	२४५
वरात=भाग्यहीन, दुर्दैवी	३७	भाड=ठगना	५९
वले=वलवान्	६६	भाट=वचना करना	३६०

भिक्षारी=भिखारी १४७
भिडि=अति वेग मे ४६१
भुज=भुगताना, भोगने को
  वाध्य करना ७९
भंल=हुआ ५५
मज्=डूवना ३५
मनगोटे=मन (गोटे-उपशब्द) ३४६
मरन्ताजन=मरनेवाला २१७
मरिषण=मुक्ति, छुटकारा १५३
मषिमूर=चूर्ण, विदीर्ण २२८
माजत=वीच मे २३२
मार=घात, अहित, हत्या ३२
मारणा मारे=हमला करना ४९४
मिछा=मिथ्या २९
मिनति=प्रार्थना ११४
मुद=ढक्कन ४०८
मेलि=उठाकर ३१६
मोट=ऊपर का आवरण,
  ढक्कन ३६१
मोहोर=मेरा १०२
र=रहना ४
रंग=आनंद १८७
रागा=रचनवण २८५
राव=रव, आवाज ४५६
ल=लेना ४
रुर=दाता होना २५९
रुदहे=दाते हुए १९७
लाग=सान्निध्य २११
शक=सन्देह १८७
शमन=यम ४९९
शुज=चुकाना ४७१
सखित=सखित्व ४९६
सघन=वार-वार ३६३
सगगोटे=साथ ४५३
सजात=विश्वास २६०
समिधान=उत्तर ७६
समूलि=पूरी तरह से १५
समे=तुल्यत्वे, समानत्वे ३२१
सरसरि=अहरह, अखड ४४६
सरि=श्रेष्ठ, समान १९१
सवारो=सवका ४७०
सवे (सव)=सव ३१
साजु=प्रस्तुत, तैयार २८३
साते-पाचे=पाँच-सात व्यक्ति
  (एकत्रित होकर) २८३
सि=उस १५५
सिजय=सिद्ध या सम्पन्न होना ३४२
सिटो=वह २०३
सिमत=उस तरह ३४६
सिसि=उसीने २०१
सिहेतु=जिस कारण ७८
सूचक=निदक, खल ३५४
सेइ=वही ४४५
सेव=प्रणाम, नमस्कार ५०

सेहि=उस १
सेहिमते=उस तरह १२८
सेहिसे=उसीने २०१
स्वरूप=आश्रय १८८
हन्ते=से १२५
हन्तो=होते हुए भी ३५१
हाट=बाजार ३६३
हामो=हम १४७
हासि=हँसकर ९४
हिय=हृदय ७६
हुइबोहो (ह)=होऊँगा ७
हुयाछ=हुए हो ३६८
हेन=ऐसा १
हेनय=ऐसे २
हेनो=ऐसा ४२०
हेर=अरे ! (बुलाने का सम्बोधन) ३०
हेरा=अरे ! (बुलाने का सम्बोधन) ३८
हेला=आलस्य ७८
हेला=उपेक्षा २९९
हैबार=होना १३
होक=हो ! ९
हौक=हो ६

